



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

दुःखंति दुःखी
इह दुःखकडेणं।

अपने दुष्कृत से दुःखी
बना हुआ प्राणी दुःख का
ही अनुभव करता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 26 • 3 - 9 अप्रैल, 2023



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 01-04-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

महाव्रतधारी साधु के दर्शन से वैराग्य भाव जागृत हो सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग-अहमदाबाद,
२५ मार्च, २०२३

अर्हत वाणी के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित पारिवारिक निर्देशित एवं E-Digital निर्देशिका का लोकार्पण एवं आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ विहार मंच द्वारा आचार्य तुलसी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी, मुख्यमंत्री भूपेंद्र भाई तथा अतिथि विशेष राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश एवं विश्वनाथ सचदेवा उपस्थित रहे।

परमपूज्य ने पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आगम में एक बात आती है कि राजा उद्यान में गया। बगीचा सुंदर था। वहाँ राजा ने एक शिकार को देखा, तीर से निशाना साधा और वह हिरण काल



सदुपयोग करें। मानव जीवन की चार अवस्थाएँ बताई गई हैं—बाल्य, किशोर, युवा और बुढ़ापा।

अहमदाबाद पारिवारिक निर्देशिका व ई-निर्देशिका का विमोचन पूज्यप्रवर की सन्निधि में किया गया। जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, अहमदाबाद के सभी पदाधिकारियों ने अहमदाबाद पारिवारिक निर्देशिका पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में उपहृत की। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि अहमदाबाद का तेरापंथ समाज बड़ा है। निर्देशिका संपर्क का अच्छा साधन है। आध्यात्मिक गतिविधियाँ श्रावक समाज में चलती रहें। सभी में अच्छे संस्कार रहें।

निर्देशिका के संयोजक धनपत मालू ने इसके बारे में पूरी जानकारी दी। ई-निर्देशिका की जानकारी उसके संयोजक नरेश सालेचा ने दी। विकास पितलिया ने आभार व्यक्त किया। पूर्व अध्यक्ष नानालाल



धरती को स्वर्ग बनाने के लिए धारण करें अहिंसा का सिद्धांत : आचार्य देवव्रत

महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी ने कहा कि आप लोगों को आचार्यप्रवर से जीवन दर्शन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। आचार्यश्री जैन धर्म के महाव्रतों का सावधानी से पालन करते हैं। सकारात्मक सोच ही हमें भौतिक, आध्यात्मिक और मानसिक रूप से बल देने वाली है। आज दो पत्रकारों को पत्रकारिता के क्षेत्र में सम्मानित किया जा रहा है। दोनों को बहुत-बहुत बधाई व साधुवाद भविष्य में भी आप प्रगति करते रहें।

भगवान महावीर ने जो दर्शन दिया वो सार्वभौतिक है। वो हर काल, हर देश में समान रूप से लागू होने वाला है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह वो सिद्धांत हैं, जो धर्म का वास्तविक रूप हैं। दो शब्द हैं—हिंसा और अहिंसा। इन दोनों में जो टिक जाए, स्वीकार्य हो जाए वो धर्म है। अहिंसा सार्वभौम धर्म है। चोरी दूसरों की वस्तु की होती है। त्याग अपनी चीज का होता है। ये संसार शाश्वत नहीं है। ये सिद्धांत सारे मानव अपने हृदय में धारण कर लें तो धरती पर स्वर्ग हो जाएगा।

इसी परंपरा का पालन आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने किया और आज इस परंपरा को आचार्य महाश्रमण जी जन मानस में बढ़ा रहे हैं। पूरी मानवता के लिए सौभाग्य की बात है। सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

कलवित हो गया। राजा ने देखा एक साधु सामने ध्यानस्थ बैठा है। साधु तो अहिंसा, दया, क्षमा और समता मूर्ति होते हैं। ऐसे साधु का दर्शन कोई श्रद्धा से करे तो दर्शनकर्ता के पाप निरजीर्ण हो सकते हैं। जो तन से, मन से, वचन से किसी को दुःख नहीं देते, ऐसे अहिंसक महाव्रतधारी, साधु के दर्शन करने से पाप झड़ सकते हैं। वैराग्य भाव जागृत हो सकते हैं।

साधु के चेहरे से सरलता-ऋजुता टपक रही थी। राजा ने सोचा मैंने इस हिरण को मारा है, साधु इसका पता लगने से कुपित हो सकता है। साधु तो समता की प्रतिमूर्ति होते हैं। राजा भयभीत हो गया। उसने साधु से क्षमा माँगने की सोची। एक तो है, बलात् कार्य करना और एक है, समझाकर हृदय परिवर्तन करके उसको रास्ते पर लाना। साधु ने राजा को अभयदान का महत्त्व समझाया तो राजा भी समझ गया। साधु तो अभयदान-दाता होता है।

अभयदान सबसे बड़ा दान होता है। हिंसा में आसक्त न बनें। निंदनीय कार्यों को छोड़ें। अभयदान वांछनीय हो।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि भारतीय दर्शन की दो धाराएँ आस्तिक और नास्तिक रही हैं। आस्तिक धारा में आत्मा, कर्म, ईश्वर को स्वीकार किया है, पर नास्तिक धारा इनमें विश्वास नहीं करती। जैन दर्शन तो हर जीव को ईश्वर बनने का अवसर दे रहा है। पर वह ईश्वर को कर्ता-धर्ता के रूप में स्वीकार



आचार्यश्री महाश्रमण जी से प्रेरणा लेकर जीवन सफल बनाएँ : भूपेंद्र भाई पटेल

मुख्यमंत्री भूपेंद्र भाई पटेल ने कहा कि हमारा भारत देश सदियों से धर्म-अध्यात्म व संत परंपरा की सुविख्यात परंपरा वाला देश है। जैन धर्म में क्षमा और अध्यात्म के साथ मानव मूल्यों का निर्माण करने में आचार्य तुलसी के योगदान को वंदन करता हूँ। जैन धर्म में सब जीवों के कल्याण की बात है। अहिंसा की बात है। संत हमारे देश की अमूल्य धरोहर हैं। हम आचार्यश्री महाश्रमण जी से प्रेरणा लेकर जीवन को सफल बनाएँ।

नहीं करता। जैन दर्शन किसी भी वस्तु की व्याख्या अनेक दृष्टिकोण और नय से करता है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि हमें मानव जीवन मिला है। मानव जीवन को सफल बनाने के लिए समय का

कोठारी, अरविंद दुगड़, डॉ० महावीर व दिनेश बुरड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

मैनाक भरसारिया ने २७ एवं आंगी नितिन खतंग ने ८ की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए।

(शेष पृष्ठ २ पर)



कर्म फल का नियम सब पर लागू : आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग-अहमदाबाद,
२९ मार्च, २०२३

अणुव्रत अमृत महोत्सव, के अंतर्गत मंगलवार को संयम दिवस पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन पाठ्य प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन वाङ्मय में कर्मवाद का संदेश देने वाला श्लोक है, जिसमें कहा गया है कि जो किए हुए कर्म हैं, उनसे छुटकारा नहीं मिलता।

जैन दर्शन के अनेक सिद्धांत हैं, उनमें आत्मवाद एक सिद्धांत है कि आत्मा अलग है, शरीर अलग है। आत्मा सभी प्राणियों और सिद्धों की शाश्वत है। अनंत काल से आत्माएँ थीं, हैं और रहेंगी। एक भी आत्मा न कम होगी और न ही बढ़ेगी। अनंत काल की यात्रा में अनंत समय बीत जाने पर भी एक भी आत्मा नई पैदा नहीं होगी। जबकि मनुष्यों में तो नैऋतु या आधिक्य हो सकता है।

हर आत्मा के असंख्य प्रदेश होते हैं। प्रदेश भी न एक भी कम होता है या न ही एक भी बढ़ता है। आत्मवाद आस्तिकवाद का एक सिद्धांत है।

जैन दर्शन का दूसरा सिद्धांत है—कर्मवाद। वर्तमान में संसारी जीवों के आत्मा के साथ कर्म भी हैं। सिद्धों की आत्मा अकर्ण होती है। केवली की आत्मा के भी चार अघाती कर्म रहते हैं। कर्मवाद का



छोटा-सा प्राणतत्त्व है—जैसी करणी, वैसी भरणी, दुःख-सुख स्वयं मिलेगा। कर्मवाद का सिद्धांत आदमी को गलत कार्य करने से रोकने में सहायक बन सकता है कि कृत कर्म का फल भोगना होगा। इसलिए पाप का काम न करूँ। कर्मवाद निष्पक्षता की पराकाष्ठा है।

कर्म का फल नियम सबके लिए लागू होता है। कर्मवाद से कोई बच नहीं सकता।

पाप कर्म से बचने के प्रति जागरूक रहें। अणुव्रत से तो पशु भी श्रावक बन सकता है। दूसरे का अहित हो जाए, ऐसा पाप न करें। सभी गृहस्थ एवं नास्तिक आदमी भी अणुव्रती बन सकते हैं।

आचार्य तुलसी ने मानव कल्याण के लिए अणुव्रत आंदोलन का अवदान दिया था। संयम दिवस पर जितना हो सके संयम करें। जीवन में बुरा काम करने से बचने का

प्रयास करें, यह एक प्रसंग से समझाया कि मन में खराब भाव आने से आदमी खराब काम करने लग जाता है। आदमी पाप कर्मों से बचने का प्रयास करे, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर ने अहमदाबाद प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष गौतम बाफना के स्टॉफ के लोगों को सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति के संकल्पों को समझाकर स्वीकार करवाए। पूज्यप्रवर ने देशना से पूर्व अणुव्रत गीत का सुमधुर संगान किया। गौतम बाफना ने संकल्प पत्र पूज्यप्रवर को उपहृत किए।

पूज्यप्रवर ने मुनि सिद्धार्थ कुमार जी जो पहले समण श्रेणी में रह चुके हैं, वर्तमान में वर्षातप साधना में अग्रसर हैं, को १३ की तपस्या के प्रत्याख्यान करवाकर आशीर्वचन फरमाया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने

कहा कि अणुव्रत अमृत महोत्सव पूज्यप्रवर की सन्निधि में शुरू हो चुका है। वर्षभर मंगलवार के दिन को प्रायोगिक दिन बना दिया है। आज नैतिक मूल्यों और समता की बात की जाती है, पर आदमी चाहते हुए भी अधर्म से निवृत्त नहीं हो रहा है। मोहकर्म के कारण वह धर्म का कार्य नहीं कर पाता है। हम कहाँ हैं, किसके पास रह रहे हैं, चिंतन करें। अज्ञान, प्रमाद, ज्ञान का अहंकार और बुरी संगत से आदमी बुराई में चला जाता है। हम अपनी बुरी आदतों को श्रद्धा एवं दीर्घकालीन प्रयोग से दूर कर सकते हैं।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि सुख की प्राप्ति भौतिक जगत और आध्यात्मिक जगत दोनों में हो सकती है। भौतिक जगत में क्षणिक सुख है, तो आध्यात्मिक जगत में दीर्घकालीन सुख प्राप्त होता है। इसके लिए संयम की साधना करनी होगी। कषायों का शमन करना होगा। नशामुक्त जीवन जीने का प्रयास करें। 'मन निर्मलता को प्राप्त करो, तुम्हें आनंद मिल जाएगा' गीत का सुमधुर संगान किया।

उपासक श्रेणी द्वारा सुमधुर गीत की प्रस्तुति हुई। अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत पर अपनी भावना रखी। गौतम बाफना, चिकित्सा प्रभारी अशोक सेठिया, कोषाध्यक्ष नरेंद्र सुराणा, विजयराज संकलेचा ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। स्थानीय अणुव्रत समिति द्वारा गौतम बाफना का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि जीवन में दुःख-सुख का कारण कर्म है। कर्म का कारण है—राग और द्वेष।

महाव्रतधारी साधु के दर्शन से वैराग्य भाव...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ विकास मंच द्वारा आचार्य तुलसी सम्मान समारोह का आयोजन

आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ विकास मंच लगभग पिछले १५-१६ वर्षों से पत्रकारिता के क्षेत्र से जुड़े लोगों का सम्मान करती आ रही है। वर्तमान में राजकुमार पुगलिया इसके संयोजक हैं। सम्मान समारोह में मनीष बरड़िया एवं दीक्षित सोनी को आचार्य तुलसी सम्मान से सम्मानित किया गया।

सर्वप्रथम मुख्य अतिथि व विशेष अतिथियों का साहित्य से सम्मान किया गया। विश्वनाथ सचदेवा व हरिवंश ने इस सम्मान के संबंध में जानकारी दी। तारा मेहनोत ने मंगलाचरण अणुव्रत गीत से किया। राजकुमार पुगलिया ने सम्मान व लेखकों की लेखनी के बारे में जानकारी दी। आचार्यश्री तुलसी के अवदानों का गुणगान किया।

दीक्षित सोनी को वर्ष २०२१ के लिए आचार्य तुलसी सम्मान मुख्य अतिथि श्री आचार्य देवव्रत के करकमलों से प्रदान किया गया। दीक्षित ने पूज्यप्रवर से आशीर्वाद लिया। मनीष बरड़िया जिन्होंने अद्भुत डिजाइनों से धर्मसंघ व राष्ट्र की सेवा की है, को भी आचार्य तुलसी सम्मान से सम्मानित किया गया।

परम पावन ने आशीर्वचन फरमाया कि धर्मशास्त्र में मनुष्य जन्म को दुर्लभ बताया गया है, बहुत महत्त्वपूर्ण बताया गया है। वह आत्मा से परमात्मा तक की स्थिति को प्राप्त हो सकता है। मनुष्य अगर उत्पथ में चला जाए तो मनुष्य दुनिया का एक अधम प्राणी बनने की स्थिति में आ सकता है। भारत का सौभाग्य है कि यहाँ संत परंपरा लंबे काल से चली आ रही है। अनेक धर्म ग्रंथ और पंथ हैं। इसका लाभ जनता उठाए तो आध्यात्मिक उन्नयन की दिशा में आगे बढ़ सकती है।

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के नाम से एक आंदोलन चलाया। जो जन-जन के जीवन का कल्याण करने वाला है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान का अवदान दिया। अध्यात्म से मानसिक शांति और भीतरी सुख मिल सकता है। दोनों आचार्यों ने नैतिकता और आध्यात्मिकता के प्रचार का कार्य किया।

आज आचार्य तुलसी सम्मान से दीक्षित और मनीष को सम्मानित किया गया है। आदमी जीवन में अच्छा कार्य करता रहे। पत्रकारिता या कोई अन्य क्षेत्र हो, आदमी में प्रामाणिकता-नैतिकता के प्रति सम्मान रहे। निष्पक्षता-निर्भीकता रहे। यथार्थता और स्पष्टता रहे। गुजरात में खूब धार्मिकता रहे। नैतिक मूल्यों का विकास हो। अहिंसा-संयम की चेतना का विकास हो। गुजरात राज्य अध्यात्म की दृष्टि से भी विकास करता रहे, मंगलकामना।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने 'श्रद्धा विनय समेत णमो अरहंताणं' गीत का सुमधुर संगान किया। सभी लोगों द्वारा राष्ट्रगान का संगान किया गया।

पूज्यप्रवर के मंगलपाठ से कार्यक्रम का समापन हुआ। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने पाँच पर्व तिथियों के बारे में समझाया।

शाश्वत सत्य की अनुभूति है भिक्षु विचार दर्शन

कुर्ला (मुंबई)।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में बैंगानी उत्कर्ष पर विशेष कार्यशाला संपन्न हुई। तेरापंथ भवन में आयोजित इस कार्यशाला में साध्वी निर्वाणश्री ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने धर्म और आचार की बुनियाद पर धर्मक्रांति की। आचार्य भिक्षु का विचार दर्शन शाश्वत सत्य की अनुभूति है। आचार्य भिक्षु ने साध्य-साधन के साथ तादात्म्य की चर्चा की। उन्होंने मिश्र धर्म की मान्यता को नकार दिया।

मुख्य प्रशिक्षक डॉ० साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि 'भिक्षु विचार दर्शन' ग्रंथ पर आधारित धर्म के विविध पहलु पर विशद विवेचन किया। आचार्य भिक्षु के गहन दर्शन की रोचक प्रस्तुति से साध्वीश्री जी ने सबको भाव-विभोर कर दिया।

कार्यशाला का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ, जिसे मीना साबत्रा व चंदा बडौला ने प्रस्तुत किया। सभाध्यक्ष कांतिलाल कोठारी ने सभी का स्वागत किया। आभार ज्ञापन प्रेमलता सिसोदिया ने किया। मंच संचालन वरिष्ठ कार्यकर्ता दिनेश सुतरिया ने किया।

अणुव्रत यात्रा पर विशेष अणुव्रत यात्रा : एक नई शुरुआत

□ साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा □

१७८५-१७८५ में फ्रांस में क्रांति हुई। उसका उद्देश्य था—मानव और मानवता का विकास हो। उस क्रांति का मकसद था स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की भावना जन-जन में जागृत हो। इस क्रांति से वहाँ के लोगों को कितना लाभ मिला अथवा कितनी संतुष्टि मिली, यह एक चिंतन का अलग मुद्दा है, किंतु आज भी फ्रांस की जनता के कर्णकुहरों में वह घोष अनुगुंजित हो रहा है।

परमपूज्य आचार्य महाश्रमण जी ने अहिंसा यात्रा करने का निर्णय लिया। इस यात्रा को सफल और सार्थक बनाने हेतु सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति (Harmony, morality and de addiction) त्रि-सूत्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया। आचार्यप्रवर नेपाल, भूटान तथा हिंदुस्तान के बीस प्रांतों में परिभ्रमण कर चुके हैं। जिस क्षेत्र में आपका पदार्पण होता, वहाँ की जनता इस सूत्रत्रयी को स्वीकार करने के लिए उद्यत रहती। इसके माध्यम से आचार्यप्रवर एक इंसान को अच्छा बनाने का बोध पाठ दे रहे थे।

वर्तमान परिस्थितियों में अहिंसा यात्रा की प्रासंगिकता को नकारा नहीं जा सकता। चारों ओर हिंसा बढ़ रही है। एक देश दूसरे देश के अस्तित्व को देखना नहीं चाहता। दूरियाँ बढ़ रही हैं, पारिवारिक रिश्ते चरमरा रहे हैं, नकारात्मक चिंतन द्रौपदी की चौर

की भाँति वृद्धिगत हो रहा है। ऐसी स्थिति में 'सद्भावना ज्योति, को प्रज्वलित करें तो निःसंदेह नकारात्मक भावों के प्रभाव को कम किया जा सकता है। पूज्यप्रवर आचार्यप्रवर ने इस यात्रा में सद्भावना का दीप प्रज्वलन किया। आचार्यश्री अनेक बार अपने प्रवचनों में फरमाते—जाति, वर्ग, क्षेत्र और संप्रदाय को लेकर दंगा-फसाद न हो। कलह-लड़ाई, मारपीट न हो। हिंसा भड़के वैसा कार्य न हो। परस्पर सद्भावना हो, किसी के प्रति दुर्भावना न हो। कटुता और विद्वेष का भाव न हो। विभिन्न व्यक्तियों, वर्गों और समुदायों के अपने-अपने विचार हो सकते हैं, उन विचारों के प्रति उनका समर्पण भी हो सकता है। अपने सही विचारों को छोड़ने की जरूरत नहीं है, पर हमारी सद्भावना सबके प्रति रहे। समभाव रहे न रहे, सद्भाव सबके प्रति रहना चाहिए और मैं तो कहूँगा मानव मात्र के प्रति रहना चाहिए और इससे भी आगे कहूँ तो प्राणिमात्र के प्रति हमारे मन में सद्भावना रहनी चाहिए।

अहिंसा यात्रा में आचार्यप्रवर के सद्भावात्मक व्यक्तित्व से प्रभावित होकर हर कौम (हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि) के लोग उनके पास आते और उनसे मार्गदर्शन भी प्राप्त करते थे।

वर्तमान के वातावरण में अनैतिकता का स्वर बुलंद हो रहा है। व्यक्ति असत्य,

संभाषण, चोरी और अनपेक्षित संग्रह करने में भी भयभीत नहीं होता। व्यापार में उचित-अनुचित की भेदरेखा को भुला देता है, एक-दूसरे को कुशलता से छल सकता है। अशुद्ध साधनों से धन के अर्जन में भी किसी प्रकार के संकोच की अनुभूति नहीं करता। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनके सामने कैसी भी स्थिति आए, वे अपने उसूलों के साथ समझौता नहीं करते। अहिंसा यात्रा में आचार्य महाश्रमण जी ने इंसानियत को सुरक्षित रखने के उपाय बताए। सन् २०१४ में पूज्यपाद आचार्य महाश्रमणजी ने हरियाणा प्रवेश के प्रसंग पर फरमाया था—'हरियाणा शराब से नहीं, धर्म से हरा-भरा रहे।' आचार्यप्रवर की तीव्र अभीप्सा है कि हर व्यक्ति व्यसनमुक्त बने। अहिंसा यात्रा में लाखों-करोड़ों लोगों ने नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया है।

जो व्यक्ति नैतिकता के आदर्श को अपने सामने रखकर आगे बढ़ता है तो निश्चित रूप से वह चरित्रसंपन्न बन सकता है। वर्तमान में गुजरात की धरती पर कदम रखते हुए आचार्यप्रवर ने अणुव्रत के अभियान को अपना प्रमुख उद्देश्य बना लिया। अणुव्रत यात्रा के रूप में घोषित यह अणुव्रत आंदोलन का अमृत महोत्सव देश और दुनिया को सही इंसान देने का उपक्रम बन सकेगा, ऐसा विश्वास है।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रति उद्गार

अर्हम

● साध्वी अमितयशा ●

महाश्रमणी सन्निधि पाई भैक्षव गणरी पुण्याई।
हम भूल न पाएँगे तुलसी, प्रभु उपकार।।

छोटा सूरज के आँगन में स्वयं लक्ष्मी चलकर आई,
मंगलमय शुभ दीप जले हैं मानो दिवाली आई,
बंग भूमि पर जन्म लिया, बंद कुल का भाग्य खिला।।

कला पारखी श्री तुलसी अपनी नजर टिकाई थी,
कर में बे वत्सलता छैनी प्रतिमा खूब सजाई थी,
शुभ पुण्यों का योग मिला, कनकप्रभा का रूप खिला।।

स्वाध्याय सरोवर में देखा तुम डूबकी रोज लगाती थी,
ब्रह्म मुहूर्त इमस्ति बेला में ध्यान जाप करवाती थी,
पुरुषार्थी जीवन तेरा, जीवन है उज्ज्वल तेरा।।

शक्तिमयी तुम भक्तिमयी हो मातृ हृदया महाश्रमणी,
शासन माता भैक्षव गण की पारदर्शिता स्फटिक मणी,
करुणा के सागर गुरुवर, जीवनतारण है प्रभुवर।।

लय : मेहंदी रची हाथों में----

अर्हम

● साध्वी शांतिप्रभा (राजलदेसर) ●

शासनमाता के उपकारों से उन्नत हो न पाएँ,
दिल की पीड़ा किसे सुनाएँ,
ममतामयी महाश्रमणी की वत्सलता भूल ना पाए,
दिल की पीड़ा किसे सुनाएँ।

जब-जब याद किया हमने तुमने करुणा बरसाई,
गुरु तुलसी की कृति हो तुम,
हम सबको खूब है भाई,
तेरी मोहिनी मूरत को माँ
भूल नहीं हम पाएँ।

तीन-तीन आचार्यों का अद्भुत सान्निध्य मिला है,
आठवीं साध्वीप्रमुखा बनने का सौभाग्य मिला है,
तेरी ऋजुता से सिंचन पा हम मानस हरसाएँ।

प्रभु तुलसी ने निज हाथों से तुमको खूब सँवारा,
अनुपमेय व्यक्तित्व तुम्हारा लगता था मनहारा,
पौरुष की जीवंत निशानी तुमको भूल ना पाएँ।

कविता का संग्रह साँसों का तारा दिल को भाए,
मेरा जीवन मेरा दर्शन पढ़कर मन हरषाए,
तुलसी की अनगिन कृतियों का तेरा श्रम महकाए।

लंबे-लंबे चलकर प्रभु ने तुम को दर्शन दिलाए,
शासनमाता महाश्रमणी का गुरुवर मान बढ़ाएँ,
भैक्षव शासन नंदनवन सा शासन सबको भाए।

लय : नैतिकता की----

भगवान महावीर जयंती पर

● साध्वी जिनप्रभा ●

महावीर का नाम सारे जग का सहारा।
जिसने नाम जपा भव सागर से पा लिया किनारा।।

माता त्रिशला कोख से जन्मे दिव्य दिवाकर,
नृप सिद्धार्थ वंश में लाए वृद्धि शुभंकर,
वर्द्धमान है वर्द्धमान है गूँज उठा जयनारा।।

शुक्ला तेरस चैत्र की सदा-सदा को धन्य हुई,
वीर प्रसूता वसुंधरा भारत की कृतपुण्य हुई,
इस मिट्टी में जन्में हम भी हैं सौभाग्य हमारा।।

जाति, वर्ग का भेद नहीं वीर के संदेश में,
हर कोई अपना सके रहे किसी परिवेश में,
कोई भी कर सका नहीं नभ धरती का बँटवारा।।

दर्शन है महावीर का आत्म विजय ही जीत है,
सव्वभूय खेमंकरी मैत्री का संगीत है,
अनेकांत की दीपशिखा हरती आग्रह अंधियारा।।

लय : जनम-जनम का साथ---

◆ थोड़ा बोलो, पर सोचकर बोलो। देखो, वह कितना
असरदार होता है।

— आचार्यश्री महाश्रमण

शासनमाता के प्रति उद्गार

अर्हम

● साध्वी कारुण्यप्रभा ●

शासन माँ का देवलोक सुन मुरझाया मन आज।
तुम जैसी महाश्रमणी पर दुनिया करोगी नाज।।

मुस्काता खिलता चेहरा लगता प्यारा,
आभामंडल शांतिप्रदायक मनहारा,
जिसने चरण सन्निधि पाई सर गए वाञ्छित काज।।

तेरी वत्सलता पाकर हम फले-फूले,
शांति प्रदाय शीतलता पा खूब खिले,
हर क्षण मुस्काता तब चेहरा क्या है इसका राज।।

एक नजर तेरी हम पर जब टिक जाती,
मानो दिल की हर आशाएँ फल जातीं,
तेरी भोज भरी मिठी-मिठी लगती आवाज।।

एक बार जिसने पाई सन्निधि तेरी,
उसके दिल में बस गई माँ सूरत तेरी,
तेरी प्रवचन शैली लगती सचमुच बेअंदाज।।

लंबे-लंबे चलकर गुरु ने दर्शन दिए,
मन के सब अरमान प्रभु ने पूर्ण किए,
फाल्गुन शुक्ला चवदश को दिल्ली में अंतिम साँस।।

लय : बार-बार तोय क्या समझाऊ---



द पॉवर ऑफ़ साइलेंस शिल्पशाला का आयोजन

टी-दासरहल्ली।

अभातेममं के निर्देशानुसार टी-दासरहल्ली तेममं द्वारा द पॉवर ऑफ़ साइलेंस कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा हुआ। अध्यक्षा रेखा मेहर ने सबका स्वागत किया और मौन का संकल्प भी करवाया।

सोनल कुंकुलोल ने कहा कि साइलेंस का मतलब ये नहीं कि मौन रहें, बोलना भी जरूरी है पर हमारे बोल पर नियंत्रण रखकर बोले तो सबको फायदा होगा, एक राजा और शिष्य की कहानी भी सुनाई।

कन्या मंडल प्रभारी सोनिया पोखरना ने कहा कि अमीर घर की लड़की का अपने मौन संकल्प पर नियंत्रण रखने से कैसे जीवन सफल हुआ। देवरानी-जेठानी की कहानी भी सुनाई।

प्रिया पितलिया ने कहा कि मौन रखने से पाचन क्रिया अच्छी रहती है। कोषाध्यक्ष नम्रता पितलिया ने कहा कि जैसे कमान से निकला हुआ तीर वापस नहीं आ सकता वैसे ही बोले हुए बोल वापस नहीं लिए जाते इसलिए तोल-मोल के बोले।

उपाध्यक्ष नेहा चावत ने एक कविता के माध्यम से मौन का महत्त्व समझाया। बहनों की सुंदर प्रस्तुति को उपहार से पुरस्कृत भी किया। प्रथम सोनल, द्वितीय नम्रता, तृतीय सोनिया रहे। कार्यशाला का संचालन उपाध्यक्ष नेहा चावत ने किया। कोषाध्यक्ष नम्रता पितलिया ने आभार व्यक्त किया।

उम्मीद एक बेहतर कल की कार्यक्रम

कांकरोली।

अभातेममं के निर्देशानुसार निर्माण परियोजना के अंतर्गत 'उम्मीद - एक बेहतर कल की' कार्यशाला की सातवीं विजिट कांकरोली महिला मंडल द्वारा माधव शिक्षण संस्थान, वासोल गाँव में आयोजित की गई। कार्यशाला का विषय 'माता-पिता की आज्ञा का पालन' था।

कार्यक्रम संयोजक सरोज सोनी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का आगाज हुआ। महिला मंडल की मंत्री मनीषा कच्छरा ने महाप्राण ध्वनि व आसन करवाए और उसके लाभ बताए। सरोज चोरड़िया ने एक कहानी के माध्यम से बताया कि बच्चों को रोज सुबह उठकर माता-पिता को प्रणाम करना चाहिए।

मंडल की उपाध्यक्ष साधना चोरड़िया, मोनिका चोरड़िया और रेखा सोनी ने श्रवण कुमार और उनके अंधे माता-पिता की कहानी पर एक छोटी सी नाटिका की प्रस्तुति दी। मंडल की उपाध्यक्ष उषा कोठारी

श्री महिला मंडल के विविध आयोजन

ने पंडित जवाहरलाल नेहरू के ऊपर बच्चों को प्रेरक प्रसंग सुनाया।

कार्यक्रम के संयोजक किरण बाफना ने अपने विचार व्यक्त किए। मंडल की पूर्व अध्यक्ष नीता सोनी ने बच्चों को अणुव्रत के संकल्प दिलाए। संचालन स्वीटी बागरेचा ने किया। स्कूल के सभी टीचर एवं बच्चों का आभार ज्ञापन कीर्ति कोठारी ने किया। स्कूल के प्रिंसिपल और सभी टीचर्स ने आभार व्यक्त किया।

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार निर्माण कार्यशाला के अंतर्गत उम्मीद एक बेहतर कल की कार्यशाला के चौथे चरण का कार्यक्रम तेममं द्वारा राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय, इंदिरा गांधी नगर, बालोतरा में किया गया। महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा के द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का प्रारंभ हुआ।

उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़ ने महापुरुषों के जीवन पर प्रकाश डाला। प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा ने समसामायिक विषय सत्संगति पर बताया। कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा ने अच्छे तरीके से विविध आसन करवाए। अध्यापक धीराराम डिगलर ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से हमारे स्कूल के बच्चे लाभान्वित होते हैं। उन्होंने तेममं, बालोतरा की बहनों को इस कार्यक्रम के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया। उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़ की तरफ से सभी बच्चों को पुरस्कार दिए गए एवं सभी प्रश्न-उत्तर विजेताओं को भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री संगीता बोथरा और आभार ज्ञापन सहमंत्री इंदु भंसाली ने किया। कार्यक्रम में निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, स्कूल के प्रिंसिपल समयसिंह गुजर व अन्य अध्यापक भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में लगभग 9६० बच्चे उपस्थित हुए।

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा निर्माण - उम्मीद एक बेहतर कल की कार्यशाला का आयोजन पी०आर० विला गवर्नमेंट हाईस्कूल, हिमायत नगर में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। अध्यक्ष अनिता गिड़िया ने बच्चों, अध्यापिकाओं व मंडल की बहनों का स्वागत किया। हर्षलता ने ६ बार महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया। उन्होंने बच्चों को सत्संगति पर रोचक कहानी सुनाई। बच्चों से इस विषय पर कुछ प्रश्न भी पूछे गए। सही बताने पर उनका ईनाम द्वारा उत्साह बढ़ाया गया।

हर्षलता दुधोड़िया ने माँ-बाप और गुरु की सेवा का महत्त्व समझाया। कविता बांठिया ने बच्चों को कई तरह के व्यायाम सिखाए। अल्पना दुगड़ ने छत्रपती शिवाजी महाराज की प्रेरक कहानी सुनाई और प्रश्न पूछे। अध्यापिकाओं ने महिला मंडल का स्वागत किया।

मंत्री श्वेता सेठिया ने जल संरक्षण के बारे में बच्चों को अवगत कराया। अनुप्रेक्षा द्वारा कार्यशाला संपन्न की गई। उन्होंने प्रशिक्षिकाओं, बच्चों व मंडल की बहनों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

संयोजिका हर्षलता दुधोड़िया, अल्पना दुगड़ का अच्छा सहयोग रहा।

'मंजिलें' कार्यशाला का आयोजन

उत्तरपाड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में व अभातेममं के निर्देशानुसार और स्थानीय तेममं के तत्वावधान में मंजिलें कार्यशाला का आयोजन संपतमल बाफना के निवास स्थान पर हुआ। जिसमें भाई-बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति मंजिल प्राप्त करना चाहता है, मंजिल उसी को प्राप्त होती है जिसका लक्ष्य सम्यक् होता है। जिसका मनोबल, मजबूत होता है, उत्साह का भाव होता है, दृढ़ संकल्प होता है। मुनिश्री ने आगे कहा कि जैन दर्शन के अनुसार हमारा लक्ष्य होना चाहिए वीतरागता। वीतराग का अर्थ है राग-द्वेष से मुक्ति। जो आत्मा कषाय से मुक्त होती है वह पूर्ण वीतराग कहलाती है।

व्यक्ति निषेधात्मक भावों से बचे। सकारात्मक ऊर्जा से व्यक्ति इच्छित मंजिल की ओर कदम बढ़ा सकता है। मुनि कुणाल कुमार जी ने मधुर गीत सुनाया। तेममं की बहनों ने प्रेरणा गीत गाया और सीमा गिड़िया ने विचार रखते हुए आभार व्यक्त किया। मुनिश्री के सान्निध्य में पॉवर ऑफ़ साइलेंस कार्यशाला का भी आयोजन हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

टी-दासरहल्ली।

अभातेममं के निर्देशानुसार महिला मंडल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'बैलेंसिंग वर्क एंड होम' कार्यक्रम तेरापंथ सभा भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा हुआ। बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

अध्यक्षा रेखा मेहर ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए अपना वक्तव्य दिया।

वर्क एंड होम में कैसे बैलेंस रखती हैं, सभी बहनों की सुंदर प्रस्तुति के लिए बहनों को मंच सौंपा। निवर्तमान अध्यक्ष रत्ना मांडोत ने अपने विचार रखे। कोषाध्यक्ष नम्रता पितलिया, प्रचार-प्रसार मंत्री सरोज मारु, मोनिका मेहता, सीमा पोखरना, वंदना सिंघवी, नीतू कुमारी आदि सभी बहनों ने 'वर्क एंड होम' में कैसे बैलेंस रखती हैं, वह टिप्स बताए।

सभी बहनों का उत्साह से महिला मंडल द्वारा स्वागत एवं सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री गीता बाबेल ने किया। आभार कोषाध्यक्ष नम्रता पितलिया ने किया।

गुवाहाटी।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, गुवाहाटी द्वारा तेरापंथ धर्मस्थल में महिला दिवस का कार्यक्रम दो चरणों में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण का संगान किया गया। अध्यक्ष मंजु भंसाली ने अपने वक्तव्य द्वारा सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम के प्रथम चरण की मुख्य अतिथि पान बाजार महिला थाना की इंस्पेक्टर टिवंकल गोस्वामी एवं उनकी टीम का फुलाम-गमछे एवं सम्मान पत्र से अभिनंदन किया गया।

मुख्य अतिथि ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज के समय में महिला कहां से कहां तक पहुँच गई है। महिलाएँ जो चाहें वह कर सकती हैं। कोषाध्यक्ष राजश्री दुगड़ ने इंस्पेक्टर टिवंकल गोस्वामी का परिचय दिया। उपाध्यक्ष अमराव बोथरा ने प्रेरणा सम्मान का वाचन किया। उपाध्यक्ष एवं असम-मेघालय प्रभारी सुचित्रा छाजेड़ ने कहा कि नारी शक्ति की प्रगति आचार्यश्री तुलसी की देन है।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में दो व्यवसायिक बहनें ललिता व ज्योति डागा का सम्मान प्रेरणा सम्मान पत्र से किया गया। उन्होंने बताया कि कैसे तालमेल से व अपने व्यवसाय को एक साथ चलाती हैं। मंत्री सुशीला मालू ने संयोजन करते हुए अच्छे ढंग से महिलाओं के बारे में बताया।

संगठन मंत्री विनीता सुराणा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। बहनों की सराहनीय उपस्थिति से कार्यक्रम सफल हुआ।

अहिंसा वर्सेस हिंसा कार्यशाला का आयोजन

हासन।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ सभा भवन में अहिंसा वर्सेस हिंसा कार्यशाला

का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। अध्यक्ष संगीता कोठारी ने संचालन करते हुए पधारी हुई सभी बहनों का स्वागत किया और अपने भाव प्रकट किए।

मंत्री विनीता सुराणा ने कहा कि हमें अपने जीवन में हिंसा से बचते हुए पशु जीवन की रक्षा करनी चाहिए। नम्रता सुराणा, निकिता सुराणा, ममता कोठारी, नवयुवती बहनों ने लघु नाटिका के माध्यम से बहनों को रेड डॉट, ग्रीन डॉट, ब्राउन डॉट के बारे में जानकारी देते हुए प्रस्तुति दी। सूरज तातेड़ ने आभार ज्ञापन करते हुए कार्यक्रम का समापन किया। महिला मंडल की बहनों ने लाइफ विदाउट क्रुएलिटी के पोस्टर का अनावरण किया। ५० से भी अधिक बहनों ने संकल्प पत्र भरा।

द पॉवर ऑफ़ साइलेंस कार्यशाला का आयोजन

नोखा।

अभातेममं के निर्देशानुसार, तेरापंथ महिला मंडल, नोखा के तत्वावधान में शासन गौरव साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में 'द पॉवर ऑफ़ साइलेंस' कार्यशाला का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम महिला मंडल द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मंडल के अध्यक्ष मंजु बेद ने सभी का अभिनंदन किया एवं कहा कि वाणी का मौन बाहरी है। भीतर से भावों का संयम के साथ मौन ही असली मौन है।

शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने कहा कि कब बोलें, कैसे बोलें और कितना बोलें यह समझ हमारे अंदर होनी चाहिए। शब्द परिवार को जोड़ भी देते हैं और परिवार को तोड़ भी सकते हैं। मौन के विकास से ही जीवन में सुख एवं शांति का विकास होता है। मौन से साधना पॉवरफुल बनती है और जप ज्यादा शक्तिशाली होता है। सामूहिक रूप से मौन का प्रत्याख्यान भी करवाया।

साध्वी प्रभातप्रभा जी ने कहानी के माध्यम से साइलेंस क्या है, मौन रहने के तरीके, मौन कब रखें, साइलेंस में क्या करें, बताया मौन से मानसिक एकाग्रता बढ़ती है, रिश्तों में मधुरता बढ़ती है।

मंत्री प्रीति मरोठी, धारा लुणावत ने साइलेंस के बारे में अपने विचार रखे। पूर्व अध्यक्ष कुसुम छाजेड़, बिंदु लुणावत, प्रेमलता बेद, शांति छाजेड़ आदि काफी संख्या में बहनें उपस्थित थीं।

सहमंत्री सुमन मालू ने आभार व्यक्त करते हुए साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता के भाव अर्पित किए।

तनाव मुक्ति कार्यशाला का आयोजन

छापर।

शासनश्री मुनि विजय कुमार जी के सान्निध्य में कालू कल्याण केंद्र सभागार में 'तनाव मुक्ति कार्यशाला' का आयोजन किया गया। जिसमें अणुव्रत बाल भारती विद्यालय, मूँधड़ा उच्च माध्यमिक विद्यालय, देवाणी उच्च माध्यमिक विद्यालय के लड़के-लड़कियों के अलावा स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह के साथ अच्छी संख्या में भाग लिया। योग गुरु हुक्मराम बरबड़ ने प्रशिक्षण में पूरा समय लगाया।

इस अवसर पर शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि तनाव आधुनिक जीवनशैली का पर्यायवाची शब्द बन गया है। बच्चे, युवक व वृद्ध सभी इस महामारी के चंगुल में फँसे हुए हैं। यह तनाव भी बहुरूपिया है। अनेकों रूपों

में यह मानव के साथ जुड़ा रहता है। तनाव के मुख्य तीन प्रकार देखने को मिलते हैं—शारीरिक तनाव, मानसिक तनाव, भावनात्मक तनाव। इन तीनों प्रकारों में सभी तनावों का समावेश हो जाता है। तनाव उत्पत्ति के कारणों की चर्चा करते हुए मुनिश्री ने कहा—दमित भावनाएँ, आर्थिक संकट, परस्पर बहम, घर का वातावरण, लुकाव-छिपाव, अतिक्रोध, अव्यवस्थित जीवन शैली, अतृप्त आकांक्षाएँ आदि अनेक कारण तनाव की उत्पत्ति में निमित्तभूत देखे जा सकते हैं। शासनश्री ने तनाव शमन के आध्यात्मिक उपायों की चर्चा की और उनका प्रयोग भी संभागियों को करवाया। मुनिश्री ने गीत का संगान करके कार्यशाला की उपयोगिता बताई। उन्होंने उपस्थित विद्यार्थियों को पानपराग, गुटका आदि

व्यसनों से बचे रहने की प्रेरणा दी।

चर्चा-परिचर्चा सत्र का प्रारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। अणुव्रत बाल भारती विद्यालय की छात्राओं ने अणुव्रत गीत का संगान किया। सरपंच गोपालपुरा सविता राठी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थी। तनाव के संदर्भ में प्रेरणादायी बातें उन्होंने बताई।

अणुव्रत समिति के मंत्री विनोद नाहटा, मूँधड़ा उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रिंसिपल मंगेजाराम, कन्हैयालाल पटवारी, रेखाराम गोदारा, गजराज जैन, लीलू, सृष्टि, सुनीता पटवारी व महिमा ने अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रदीप सुराणा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री चमन दुधोड़िया ने किया।



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

ओम प्रकाश-सुमन देवी छाजेड़ के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक विपिन बोथरा और देवेन्द्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया। इस अवसर पर दिलीप कातेला सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में परिवार के सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

गंगाशहर।

शुभकरण-सरोज देवी सिपानी के नूतन गृह का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक रतनलाल छलाणी और पीयूष लुणिया ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

इस अवसर पर परिवार के सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

नामकरण संस्कार

राजराजेश्वरी नगर।

अंकिता-आशीष संचेती के नवजात पुत्र रत्न का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक विक्रम दुगड़ एवं सह-संस्कारक अरविंद वैद ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

इस अवसर पर गीतिकाओं का संगान किया गया। तेयुप के जैन संस्कार विधि के संयोजक गौतम नाहटा उपस्थित रहे।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

सूरत।

कनाना निवासी, सूरत प्रवासी आकाश कुमार-संजय कुमार श्रीश्रीमाल के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष मालू, बजरंग वैद ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

आका कुमार व उनके सभी परिजनों ने जैन संस्कार विधि को वर्तमान समय में सुगम और उपयोगी बताया तथा सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से सहमंत्री प्रमोद कोठारी ने मंगलकामना करते हुए मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया।

शासनमाता की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

सिकंदराबाद।

तेरापंथ सभा के तत्वावधान में एवं साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ संघ की आठवीं साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की प्रथम पुण्यतिथि का श्रद्धा-समर्पण का भाव कार्यक्रम विजयवाड़ा-हैदराबाद हाइवे स्थित पोकरणा ग्रेनाइट फैक्ट्री के विशाल प्रांगण में आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि गुरुदेवश्री तुलसी ने साध्वीप्रमुखा के रूप में साध्वी कनकप्रभा जी की नियुक्ति कर विशिष्ट अवदान दिया है। संपूर्ण साध्वी समाज के विकास और प्रतिभा संवर्द्धन में अपने श्रम और चिंतन से भरपूर सहयोग दिया है। ऐसी समयज्ञा साध्वीप्रमुखा के नेतृत्व में, सान्निध्य में संस्कार प्राप्तिका, सेवा का अवसर मिला, यह हमारा परम सौभाग्य रहा है।

साध्वीवृंद के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वीवृंद ने गीतिका का सामूहिक संगान किया। साध्वी राजलप्रभा जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री जी ने हमें विकास-पथ प्रदान किया है। वे साध्वी समाज के विकास के प्रति सदैव जागरूक रही हैं।

टीपीएफ मंत्री अणुव्रत सुराणा एवं तेममं अध्यक्ष अनीता गिड़िया ने श्रद्धा भाव व्यक्त किए। किशोर मंडल की ओर से खुशहाल भंसाली ने अपना वक्तव्य दिया। साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

कार्यक्रम से पूर्व सामूहिक जाप के द्वारा शासनमाता को श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर चेन्नई के श्रावक-श्राविकाओं के साथ स्थानीय तेरापंथ सभा, महिला मंडल, टीपीएफ, टीटीएफ, तेयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल, महाश्रमण सेवा वाहिनी के सदस्यों की उपस्थिति रही।



अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम	अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर		5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना		5,00,000
* श्री राकेश कठोटिया, लाडनू-मुंबई		5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई		5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा		5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत		5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई		5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई		5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा		5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा		5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी		5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर		5,00,000
* श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर		5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत		5,00,000
* श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई		5,00,000

विशेष कार्यशाला का आयोजन

चंडीगढ़।

इस समय परीक्षाओं का दौर है। बच्चे पढ़ाई में जुटे हुए हैं, ज्ञान अर्जित के लिए कड़ी मेहनत की जरूरत होती है, बिना मेहनत के मिली सफलता का स्वाद अच्छा नहीं होता। मंजिल के प्रति स्पष्टता हो तो एक दिन जरूर पहुँचेंगे। ज्ञान एक ऐसा समुद्र है, जिसमें जीवन-भर विद्यार्थी बने रहना चाहिए। ज्ञान ही हमारा मित्र है, हमारा मार्गदर्शक है, ज्ञान के बिना मनुष्य की कल्पना नहीं हो सकती। यह शब्द मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन, तुलसी सभागार में व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि जो करता वह खुद को आगे नहीं रखता वह तो ओरों के द्वारा सराहा जाता है। हमारा शास्त्र भी कहता है—असीम को पाना है तो निरर्थक की धारणा को त्याग दो। जो लोग महान हुए हैं उन्होंने कार्य और ज्ञान को पूजा है। यश और धन तो स्वयं चला आता है। जिन लोगों ने निर्माण किया और जो लोग सफल हुए हैं, उनकी शक्तियों का आधार एक अदृश्य और असीम वह शक्ति है जो मानव सीमा से बाहर है। यह है अध्यात्म की शक्ति, अध्यात्म का अर्थ पूजा से लिया जाता है पर इसकी व्याख्या को सीमित नहीं किया जा सकता।

मुनिश्री ने अंत में बताया कि सफल व्यक्ति हर कार्य को गंभीरता से लेता है, उसका दिल, दिमाग और काम तीनों का अच्छा ताल-मेल होता है। हम अपनी क्षमता का बहुत छोटा-सा हिस्सा अपने विकास पर खर्च करते हैं, क्योंकि हम क्या कर सकते हैं ये हम कभी नहीं सोचते एक लकीर पर चलकर जीवन गुजार देते हैं।



मनोनुशासनम्

□ आचार्य तुलसी □



ध्यान और आसन

आसन साधना का एक अपरिहार्य अंग है। आचार्य कुंदकुंद का अभिमत है कि जो व्यक्ति आहार-विजय, निद्रा-विजय और आसन-विजय को नहीं जानता, वह जिनशासन को नहीं जानता। आसन-विजय का अर्थ है—एक आसन में घंटों तक बैठने का अभ्यास कर लेना।

महर्षि पतंजलि का अभिमत है कि आसन से द्वंद्व पर विजय प्राप्त की जा सकती है। द्वंद्व है—सर्दी-गर्मी आदि। आसन से कष्ट-सहिष्णुता की शक्ति विकसित होती है। इसलिए द्वंद्व आसनकर्ता को पराजित नहीं कर सकते।

आसन के वर्ग

अपेक्षाभेद से आसनों के दो वर्ग होते हैं—

प्रथम वर्ग—(१) खड़े होकर किए जाने वाले, (२) बैठकर किए जाने वाले, (३) लेटकर किए जाने वाले।

द्वितीय वर्ग—(१) शरीरासन, (२) ध्यानासन।

खड़े होकर किए जाने वाले आसन

समपाद

विधि—सीधे खड़े हो जाइए। गर्दन, पृष्ठवंश और पैर तक का सारा शरीर सीधा और समरेखा में रहे, इसका अभ्यास कीजिए। इसमें दोनों पैरों को सटाकर रखिए।

समय—कम से कम तीन मिनट और सुविधानुसार यह घंटों तक किया जा सकता है।

फल—(१) शारीरिक धातुओं का साम्य, (२) शुद्ध रक्त का संचार, (३) मानसिक एकाग्रता।

एकपाद

विधि—सीधे खड़े हो जाइए। उक्त विधि के अनुसार शरीर के सब अवयवों को समरेखा में ले आइए। फिर एक पैर को उठाकर सीधा फैला दीजिए। प्रारंभ में ऐसा करना कठिन होता है, इसलिए दीवार के सहारे खड़े होकर भी यह आसन किया जा सकता है।

समय—प्रारंभ में एक या दो मिनट। अभ्यास परिपक्व होने पर सुविधानुसार जितना किया जा सके।

फल—पैर, कमर, जंघा, पीठ और गले के स्नायुओं की शुद्धि।

गृध्रोडडीन

विधि—पैरों को सटाकर सीधे खड़े हो जाइए। फिर कंधों की समरेखा में दोनों हाथों को फैला दीजिए। बीच-बीच में गीध के परों की भाँति दोनों भुजाओं को हिलाइए।

समय—इसके समय की निश्चित मर्यादा नहीं है। सुविधानुसार जितना किया जा सके, उतने समय तक यह करणीय है।

फल—(१) भुजा के स्नायुओं की शक्ति का विकास, (२) गर्दन के ऊपर के स्नायुओं की पुष्टि।

कायोत्सर्ग

प्रवृत्ति के तीन स्रोत हैं—काय, वाणी और मन। इसमें मुख्य काय है। वाणी और मन उसके माध्यम से ही प्रवृत्त होते हैं। काय के स्पंदनकाल में वाणी और मन प्रस्फुटित होते हैं। उसकी अस्पंद दशा में वे विलीन हो जाते हैं। भाषा और मन के परमाणुओं का ग्रहण काय के द्वारा होता है। फिर उनका भाषा और मन के रूप में परिणमन होता है और विसर्जन-काल में वे भाषा और मन कहलाते हैं। भाष्यमाणी भाषा होती है, पहले-पीछे नहीं होती, इसी प्रकार मन्यमान मन होता है, पहले-पीछे नहीं होता।

काय वाणी और मन की प्रवृत्ति का स्रोत है, इसीलिए उसकी निवृत्ति या स्थिरता वाणी और मन की स्थिरता का आधार बनती है। काय का त्याग होने पर वाणी और मन स्वयं त्यक्त हो जाते हैं।

शरीरशास्त्र की दृष्टि से शरीर की प्रवृत्ति और निवृत्ति के परिणाम इस प्रकार हैं—

प्रवृत्ति (श्रम) के परिणाम

- (१) स्नायुओं में स्नायु शर्करा कम होती है।
- (२) लेक्टिक एसिड स्नायुओं में जमा होता है।
- (३) लेक्टिक एसिड की वृद्धि होने पर उष्णता बढ़ती है।
- (४) स्नायु-तंत्र में थकान आती है।
- (५) रक्त में प्राणवायु की मात्रा कम होती है।

निवृत्ति (आराम) के परिणाम

- (१) लेक्टिक एसिड का पुनः स्नायु शर्करा में परिवर्तन होता है।
 - (२) लेक्टिक एसिड का जमाव कम होता है।
 - (३) लेक्टिक एसिड की कमी से उष्णता में कमी होती है।
 - (४) स्नायुतंत्र में ताजगी आती है।
 - (५) रक्त में प्राणवायु की मात्रा बढ़ती है।
- स्वास्थ्य की दृष्टि से भी कायोत्सर्ग कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

स्नायविक तनाव और कायोत्सर्ग

मन, मस्तिष्क और शरीर में गहरा संबंध है। उनकी सामंजस्य-विहीन गति से जो अवस्था उत्पन्न होती है, वही स्नायविक तनाव है। शरीर और मन की सक्रियता का संतुलन रहना, प्रवृत्ति की बहुलता या संकुलता, मानसिक आवेग—ये उसके मुख्य कारण हैं। हम जब-जब द्रव्य-क्रिया करते हैं अर्थात् शरीर को किसी दूसरे काम में लगाते हैं और मन कहीं दूसरी ओर भटकता है, तब स्नायविक तनाव बढ़ता है। हम भावक्रिया करना सीख जाएँ—शरीर और मन को एक ही काम में संलग्न करने का अभ्यास कर लें तो स्नायविक तनाव बढ़ने का अवसर ही न मिले।

जो लोग इस स्नायविक तनाव के शिकार होते हैं, वे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य से वंचित रहते हैं। वे लोग अधिक भाग्यशाली हैं, जो इस तनाव से मुक्त रहते हैं।

तनाव उत्पन्न करने में भय का भी बड़ा हाथ है। अध्यात्मवादियों ने उसके सात प्रकार बतलाए हैं—

- (१) इहलोक भय—मनुष्य को अपनी ही जाति—मनुष्य से होने वाला भय।
- (२) परलोक भय—मनुष्य को विजातीय—पशु आदि से होने वाला भय।
- (३) आदान भय—धन-विनाश का भय।
- (४) अकस्मात् भय—काल्पनिक भय।
- (५) आजीविका भय—आजीविका कैसे चलेगी—इस प्रकार का भय।
- (६) मरण भय—मृत्यु का भय।
- (७) अश्लाघा भय—अपयश का भय।

ये भय मनुष्य के जीवन में व्याप्त रहते हैं। इनके द्वारा वह स्नायविक तनाव से बुरी तरह आक्रांत होकर अशांतिमय जीवन जीता है। जिसने अभय की आराधना की है, उसे कोई कष्ट नहीं होता। भयभीत व्यक्ति पल-पल में कष्ट पाता है। जिसने अभय की आराधना की है, वह जीवन में एक बार मरता है। भयभीत मनुष्य एक दिन में कई बार मरता है। भय और हिंसा में गहरा लगाव है। जहाँ भय है, वहाँ निश्चित रूप से हिंसा है। मन को अभय किए बिना अहिंसा हो ही नहीं सकती।

अनियंत्रित भय से अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। मनोविज्ञान का सिद्धांत है कि वियोग का भय जागृत होने पर मनुष्य स्नायु-विकार से ग्रस्त हो जाता है। वह दूसरों पर अत्याचार करने व उन्हें अपंग बनाने में रस लेता है।

येल विश्वविद्यालय ने भय से संबंधित कुछ निष्कर्ष प्रस्तुत किए थे। उन्हें पढ़कर हम समझ सकते हैं कि भय हमारे शरीर और मन को कितना प्रभावित करता है। भय से ये शारीरिक परिवर्तन देखे जाते हैं—दिल का धड़कना, नाड़ी का तेज चलना, मुँह या गला सूखना, काँपना, हथेलियों में पसीना आना और पेट का अंदर धँसना। मन पर भी गहरी प्रतिक्रियाएँ होती हैं। जैसे—विस्मृति, मूर्च्छा और पीड़ा की तीव्र अनुभूति होना।

स्थानांग सूत्र में असामयिक मृत्यु के सात कारण बतलाए गए हैं। उनमें भयात्मक अध्यवसाय उसका एक कारण है।

रोग के भय से पीड़ा बढ़ जाती है। निर्भय रोगी की अपेक्षा भयाक्रांत रोगी को पीड़ा की अनुभूति कई गुना अधिक होती है। मानसोपचारकों ने रोग-पीड़ित व्यक्तियों पर शिथिलीकरण के प्रयोग किए। उनसे उनकी पीड़ा में बहुत अंतर आया। भय से स्नायविक तनाव बढ़ता है। उससे पीड़ा तीव्र हो जाती है और कायोत्सर्ग से वह कम होता है, तब पीड़ा भी कम हो जाती है।

क्रोध, अभिमान, माया, लोभ, राग, द्वेष, घृणा, शोक आदि मानसिक आवेगों से भी स्नायविक तनाव बढ़ता है। कायोत्सर्ग से उन आवेगों का शमन होता है और फलतः स्नायविक तनाव अपने आप दूर हो जाता है।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □ बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(४०) संशयं परिजानाति, संसारं परिवेत्ति सः।
संशयं न विजानाति, संसारं परिवेत्ति न।।

जिसमें संशय-जिज्ञासा है, वह संसार को जानता है। जिसमें जिज्ञासा का अभाव है, वह संसार को नहीं जानता।

जिज्ञासा हमारे ज्ञान-परिवर्धन की कुंजी है। वह बौद्धिकता की सूचना करती है। जिसमें जिज्ञासा नहीं है, उसमें ज्ञान का विकास भी नहीं है। जिज्ञासा को दबाने का अर्थ है ज्ञान को कटघरे में बंद रखना।

(४१) पूर्वोत्थिताः स्थिरा एके, पूर्वोत्थिताः पतन्त्यपि।
नोत्थिता न पतन्त्येव, भङ्गः शून्यश्चतुर्थकः।।

कुछ पहले साधना के लिए उद्यत होते हैं और अंत तक उसमें स्थिर रहते हैं। कुछ पहले साधना के लिए उद्यत होते हैं और बाद में गिर जाते हैं। कुछ साधना के लिए न उद्यत होते हैं और न गिरते हैं। इसका चतुर्थ भंग शून्य होता है—बनता ही नहीं।

व्यक्ति तीन प्रकार के होते हैं—(१) पूर्वोत्थित और पश्चाद् स्थित, (२) पूर्वोत्थित और पश्चाद् निपाती, (३) न पूर्वोत्थित और न पश्चाद् निपाती।

आत्मा पर पूर्व-संस्कारों का गहरा प्रभाव होता है। अच्छे संस्कार व्यक्ति को सहजतया अच्छाई की ओर खींच लेते हैं और बुरे संस्कार बुराई की ओर। शुभ संस्कारी व्यक्ति ही साधना पर आरूढ़ हो सकते हैं, अशुभ संस्कारी नहीं। साधना के लिए पवित्रता ही पहली शर्त है। अशुभ संस्कारी व्यक्ति में वह नहीं होती।

शुभ संस्कारी साधना-पथ पर आने के बाद अपने संस्कारों को और अधिक पवित्र और सुदृढ़ बनाते चलते हैं। अतः वे अपने मार्ग से कभी विचलित नहीं होते। जो साधना-क्षेत्र में प्रविष्ट होकर संस्कारों का निर्माण नहीं करते वे अशुभ संस्कारों के झंझावात में अपने अस्तित्व को कायम नहीं रख पाते। वे साधना से परे हट जाते हैं। जिनके संस्कारों में अशुभता की प्रबलता होती है, वे न साधना में आते हैं और न गिरते हैं। गिरते वे हैं जो चलते हैं। नहीं चलने वाले क्या गिरेंगे। (क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनू' □ धर्म बोध

भाव धर्म

प्रश्न २१ : अजीवाश्रित पारिणामिक के कितने भेद हैं?

उत्तर : अजीवाश्रित पारिणामिक के दस भेद हैं—

(१) बंधन, (२) गति, (३) संस्थान, (४) भेद, (५) स्पर्श, (६) रस, (७) गंध, (८) वर्ण, (९) अगुरुलघु, (१०) शब्द।

प्रश्न २२ : क्या छटा भाव भी होता है?

उत्तर : छटे भाव का भी आगमों में उल्लेख मिलता है। वह है सान्निपातिक। इसे सांयोगिक भी कहते हैं। उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशम व पारिणामिक भावों के द्विक संयोग, त्रिक संयोग, चतुष्क संयोग व पाँच संयोग से निष्पन्न होते हैं।

प्रश्न २३ : सान्निपातिक के कितने भंग हो सकते हैं?

उत्तर : सान्निपातिक के २६ भंग होते हैं।

द्विक संयोग के दस भंग होते हैं—(१) औदयिक, औपशमिक, (२) औदयिक, क्षायिक, (३) औदयिक, क्षायोपशमिक, (४) औदयिक, पारिणामिक, (५) औपशमिक, क्षायिक, (६) औपशमिक, क्षायोपशमिक, (७) औपशमिक, पारिणामिक, (८) क्षायिक, क्षायोपशमिक, (९) क्षायिक, पारिणामिक, (१०) क्षायोपशमिक, पारिणामिक।

त्रिक संयोग के दस भंग होते हैं—(१) औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, (२) औदयिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक, (३) औदयिक, औपशमिक, पारिणामिक, (४) औदयिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, (५) औदयिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, (६) औदयिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक, (७) औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, (८) औपशमिक, क्षायिक, पारिणामिक, (९) औपशमिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक, (१०) क्षायिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक।

चतुष्क संयोग के पाँच भंग होते हैं—(१) औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, (२) औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, पारिणामिक, (३) औदयिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक, (४) औदयिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक, (५) औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक।

पाँच संयोग का एक भंग है—(१) औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण

आचार्य तुलसी

अभयकुमार



अभयकुमार राजगृह के महाराज श्रेणिक की रानी नंदा का पुत्र था। महाराज श्रेणिक ने अपने पाँच सौ प्रधानों में अभयकुमार को मुखिया बनाया। अभयकुमार अपनी बुद्धिमत्ता, निपुणता व कर्तृत्व के बल पर सारी जनता का प्रिय बन गया। अनेक अपराधियों को अपने बुद्धि-कौशल से खोज-खोजकर उसने उन्हें उचित दंड दिलवाया और जनता को निश्चिंत कर दिया। धारिणी, चेलणा आदि विमाताओं के दोहद भी अपने तप और युक्ति से पूरे करके उन्हें संतुष्ट किया।

वैशाली नगर के महाराज चेटक की यह प्रतिज्ञा थी कि वे अपनी किसी भी पुत्री की शादी किसी विधर्मी राजा के साथ नहीं करेंगे। महाराज श्रेणिक की इच्छा हुई कि मैं महाराज चेटक की पुत्री सुज्येष्ठा से शादी करूँ। सुज्येष्ठा भी महाराज श्रेणिक के प्रति आकर्षित थी। इस चिंता को भी अभयकुमार ने अपनी कुशलता से मिटाने का प्रयत्न किया और सुज्येष्ठा का हरण हो—ऐसा साज-बाज बनाया। लेकिन ऐन वक्त पर सुज्येष्ठा पीछे रह गई और उसके बदले उसकी छोटी बहन चेलणा का हरण और उसके साथ ही राजा का पाणिग्रहण हुआ।

भगवान महावीर का उपदेश सुनकर अभयकुमार संयम लेने को उत्सुक हुआ और पिता से आज्ञा चाही। महाराज श्रेणिक ने अभयकुमार को राज्य सौंपना चाहा पर अभयकुमार का आग्रह संयम के लिए ही रहा। तब राजा ने कहा—जब मैं तुझे 'जा' कह दूँ तब दीक्षा ले लेना।

एक बार ऐसा प्रसंग बना कि चेलणा ने उद्यान में एक मुनि को ध्यान में खड़े देखा। रात के समय राजा और रानी सोये थे। सर्दी बहुत अधिक थी। रानी का हाथ कंबल से बाहर रह गया और ठंड से ठिठुर गया। नींद में ही रानी के मुँह से निकला—'उसका क्या हाल होगा?' राजा चौंका और शंका का शिकार हो गया। राजा सोचने लगा—हो न हो, रानी किसी अन्य पुरुष पर मुग्ध है। उसकी चिंता के लिए ऐसा कह रही है कि उसका क्या हाल होगा? राजा का मन फट गया और अभयकुमार को प्रातः आदेश दिया कि चेलणा के महलों को जला दो। यों आदेश देकर श्रेणिक भगवान का उपदेश सुनने चला गया। भगवान ने राजा के संशय को मिटाने के लिए प्रसंगवश कहा—महाराज चेटक की सातों पुत्रियाँ सती हैं। यह सुनकर श्रेणिक चौंका और अपने किए पर अनुताप करने लगा।

इधर अभयकुमार ने बहुत ही चातुर्य से काम लिया और महारानी के महलों के पास फूस की झोंपड़ियाँ जलाकर प्रभु के दर्शनार्थ चल पड़ा। वह भी इसलिए कि मुनित्व के आदेश की प्राप्ति के लिए यही सर्वथा उपयुक्त है। उधर समवसरण से लौटते हुए श्रेणिक ने दूर से महलों से उठता हुआ धुआँ देखा तो विह्वल हो उठा और सामने से अभयकुमार आता हुआ मिला तब श्रेणिक ने गुस्से से कहा—'जा रे जा।' अभयकुमार को और क्या चाहिए था? प्रभु के पास पहुँचकर सारी स्थिति कही और संयम धारण कर लिया। पाँच वर्ष तक संयम का पालन कर विविध तपस्याओं के द्वारा कर्मों के भार को हलका किया। फिर आयुष्य पूर्ण कर विजय नामक अनुत्तर विमान में पैदा हुआ। वहाँ से महाविदेह में मनुष्य बनकर संयम का पालन करके मोक्ष प्राप्त करेगा।

महाराज श्रेणिक को अभयकुमार की दीक्षा से एक अमित आघात लगा; क्योंकि वैसा बुद्धिमान मंत्री उसको मिलना कठिन था।

जैन परंपरा में आज भी, दीपमालिका के दिन पूजन करते समय बहियों में लिखते हुए याचना की जाती है—'अभयकुमार जैसी बुद्धि।'

(क्रमशः)



अणुव्रत अमृत महोत्सव के विविध आयोजन

ईको पार्क, चेन्नई

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में अणुव्रत स्थापना के ७५वें वर्ष का आयोजन अणुव्रत अमृत महोत्सव के रूप में देशभर में मनाया जा रहा है। अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत समिति द्वारा चेन्नई महानगर के चेटपेट में स्थित ईको पार्क में अणुव्रत अमृत रैली का आयोजन हुआ। अणुव्रत अमृत रैली में करीब ४५० की संख्या में लोगों ने भाग लिया। अमृत रैली का शुभारंभ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ए०के० विश्वनाथन के करकमलों से हुआ।

पहले चरण में ईको पार्क में आयोजित इस रैली में गरिमा पुगलिया द्वारा आगंतुकों को यौगिक क्रियाओं का अभ्यास करवाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत समिति सदस्यों द्वारा मंगलाचरण स्वरूप अणुव्रत गीत के संगान से हुई।

स्वागत स्वर में समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया ने आगंतुकों का स्वागत किया। मंच का संचालन करते हुए अणुव्रत समिति मंत्री अरिहंत बोधरा ने अणुविभा सदस्य गौतमचंद सेठिया, पूर्वाध्यक्ष संपतराज चोरड़िया, अध्यक्ष ललित आंचलिया, अणुव्रत सेवी दिलीप धींग तथा मुख्य अतिथि ए०के० विश्वनाथ का स्वागत और सम्मान किया।

सम्मान समारोह में कार्यक्रम के संयोजक पंकज चोपड़ा, अशोक छल्लानी, गुणवंती खाटेड़, निर्मला छल्लानी का सम्मान किया गया। अणुव्रत अमृत रैली के इस कार्यक्रम के आतिथ्य लाभार्थी स्व० चैनराज-ताराबाई सेठिया की स्मृति में कुशलराज, भरतकुमार, विक्रमकुमार सेठिया परिवार द्वारा हुआ।

सहमंत्री स्वरूपचंद दांती ने बताया कि अनेकों सदस्यों के साथ तिरुतांगल नाडर कॉलेज के विद्यार्थियों ने रैली में भाग लिया। करीब २५० से अधिक व्यसनमुक्त जीवन शैली अपनाते हेतु संकल्प पत्र प्राप्त हुए। समिति कोषाध्यक्ष पंकज चोपड़ा के धन्यवाद ज्ञापन सहित इस रैली का समापन हुआ।

हैदराबाद

अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली ७५वें वर्ष एवं अमृत महोत्सव शुभारंभ के अवसर पर अणुव्रत अमृत रैली व सार्वजनिक सभा का आयोजन गवर्नमेंट बॉयज हाई स्कूल, रिसाला बाजा, बोलारम में किया गया। रैली का शुभारंभ अणुव्रत समिति, हैदराबाद के अध्यक्ष प्रकाश एच० भंडारी ने अणुव्रत ध्वज लहराकर किया। इस रैली में स्कूल के विद्यार्थियों व अध्यापकगण के साथ

अणुव्रत समिति के व अन्य समाज संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने भाग लिया।

रैली लगभग दो किलोमीटर के बोलारम क्षेत्र में परिभ्रमण कर पुनः स्कूल प्रांगण में समिति अध्यक्ष प्रकाश एच० भंडारी की अध्यक्षता में सभा में परिवर्तित हुई। इस सभा में डॉ० मदन देवल पोकरणा मुख्य अतिथि के रूप में पधारी।

अणुव्रत समिति, हैदराबाद के सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत का संगान किया गया। मुख्य अतिथि डॉ० मदन देवी पोकरणा ने अणुव्रत आंदोलन को आज का सबसे महत्वपूर्ण आंदोलन मानते हुए कहा कि जहाँ आज हर तरफ मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है, वह यह आंदोलन एक सूर्य किरण का कार्य कर रहा है।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष बाबूलाल बैद, महिला मंडल अध्यक्ष अनिता गादिया, बोलारम सभा अध्यक्ष रतन सुराणा, महिला मंडल बोलारम अध्यक्ष संगीता सुराणा, तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, टीपीएफ अध्यक्ष पंकज संचेती, महासभा प्रतिनिधि लक्ष्मीपत बैद, विद्यालय प्रिंसिपल शिव प्रसाद सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। स्कूल के अध्यापक मोहम्मद जहांगीर ने विचार व्यक्त किए। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत किया।

अणुव्रत समिति की ओर से विद्यालय के उपयोग के लिए फर्नीचर व पोडियम भेंट किए गए। कार्यक्रम का संचालन संगठन मंत्री नीरज सुराणा व मंत्री अशोक मेड़तवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मुंबई

अणुव्रत आंदोलन के ७५वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अणुव्रत महोत्सव का अणुव्रत अमृत रैली के साथ शुभारंभ किया गया। रैली टैम्बी नाका जैन मंदिर से प्रारंभ होकर माजी वाड़ा तेरापंथ भवन में पहुँचकर नशामुक्ति सभा के रूप में परिवर्तित हो गई। जिसमें स्कूल के बालक-बालिकाओं ने नाटक के द्वारा प्रस्तुति दी।

शासनश्री साध्वी चंदनबाला जी, साध्वी राकेश कुमारी जी, साध्वी काव्यलता जी आदि ने बच्चों को नशामुक्ति एवं स्कूल के नकल आदि विषयों पर प्रेरणा पाथेय प्रदान करवाया, संकल्प ग्रहण करवाए।

मुख्य अतिथि विधायक निरंजन डावखरे, भाजपा प्रदेश सचिव संदीप लेले, भाजपा महिला मोर्चा अध्यक्ष मृणाल पेडसे, नगरसेविका नंदा पाटिल थे।

रैली को अणुव्रत समिति मुंबई अध्यक्ष कंचन सोनी, गणपत डागलिया, रमेश चौधरी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। स्वागत अभिभाषण अणुव्रत मुंबई अध्यक्ष

कंचन सोनी ने किया।

आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति, मुंबई के अध्यक्ष मदन तातेड़, महामंत्री सुरेंद्र कोठारी, तेरापंथी सभा ठाणे अध्यक्ष रमेश सोनी, रैली संयोजक मनोहर कच्छारा, तेममं, मुंबई अध्यक्ष रचना हिरण आदि ने अपना वक्तव्य दिया।

कार्यक्रम में अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम में रतन हर्ष कच्छारा, सुखिया महेंद्र मांडोत, संजय चौधरी का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। आभार ज्ञापन संयोजक मनोहर कच्छारा एवं कार्यक्रम का संयोजन राजू बाफना ने किया। पूरे मुंबई से अणुव्रत परिवार की सराहनीय उपस्थिति एवं सहयोग रहा।

● अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली ७५ वर्ष अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत समिति, मुंबई द्वारा आयोजित नशामुक्ति कार्यक्रम हनुमान टेकडी सायन कोलीवाड़ा में कैसर पेशेंट के बीच रखा गया।

मुख्य वक्ता के रूप में उपासक प्रकाश धाकड़ ने सहभागिता की एवं अपना वक्तव्य दिया। इस अवसर पर मुंबई अध्यक्ष कंचन सोनी ने अणुव्रत समिति, मुंबई की ओर से ५ पेशेंट के डायलिसिस की घोषणा की एवं गोल्ड मेडलिस्ट चंद्रा दुबे ने बच्चों को योगा करवाया।

प्रेक्षा प्रशिक्षक मधु मेहता, मनीषा गुप्ता और संयोजक अरविंद सोनी का एवं पूरे अणुविभा परिवार का सराहनीय सहयोग एवं अच्छी उपस्थिति रही।

डोंगरी

अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत समिति द्वारा नशामुक्ति कार्यक्रम बाल सुधार गृह में अरुणा चोरड़िया जो एक लाइफ कोच और मोटिवेशनल स्पीकर है। डोंगरी सुधार गृह में मुख्य वक्ता के रूप में पधारे उन्होंने कहानी के द्वारा बच्चों को अच्छा जीवन जीने के लिए मोटिवेट किया।

अरुणा ने सेशन की शुरुआत लाफ्टर थैरेपी से की। उन्होंने बताया कि मनुष्य जीवन अपने सोचने-समझने की शक्ति के कारण हमेशा अमूल्य रहा है। उन्होंने बताया कि आज के बच्चे ही हमारे देश का भविष्य है, अगर वह अपने जीवन को सार्थक करते हैं तो हमारा देश और समाज का नव निर्माण होगा।

पूर्व अध्यक्ष गणपत डागलिया, अध्यक्ष कंचन सोनी, कोषाध्यक्ष लतिका डागलिया, कार्यसमिति सदस्य किरण डागलिया, मधु मेहता, दक्षिण मुंबई संयोजक किसन राठौड़, सह-संयोजक प्रवीण डागलिया एवं अणुव्रत परिवार की उपस्थिति रही।



टीपीएफ फेमिना विंग-नर्वर योरसेल्फ कार्यशाला का आयोजन

साउथ कोलकाता।

आज की नारी अपने घर और प्रोफेशनल कैरियर के बीच सामंजस्य स्थापित कर अपने परिवार का समुचित ख्याल रखती है। इस समूचे जीवनचक्र में वह खुद को भूल, दूसरों को खुश करने में लगी रहती है। इसी गंभीर अनछुए विषय को ध्यान में रखते हुए टीपीएफ साउथ-कोलकाता की फेमिना विंग ने समाज की जानी-मानी मोटिवेटर एवं काउंसलर शिप्रा सुराणा बोस जो स्वयं १५ वर्षों से इस फील्ड में अपनी सेवाएँ दे रही हैं, से अनुरोध कर एक मेंटल हेल्थ वेलनेस कार्यक्रम 'नर्वर योरसेल्फ कार्यशाला' का आयोजन किया।

टीपीएफ साउथ कोलकाता की फेमिना कन्वेनर खुशबू दुगड़ ने कार्यक्रम की शुरुआत की। सर्वप्रथम टीपीएफ ईस्ट जोन-१ की सदस्य स्नेहा पारख ने मंगलाचरण का संगान किया। इसके पश्चात टीपीएफ साउथ-कोलकाता के अध्यक्ष आलोक चोपड़ा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सभी का अभिनंदन किया। उन्होंने 'टीपीएफ परामर्श' के बारे में विस्तार से बताया कि नया आयाम समाज की मदद के लिए है और हम इसे 9916691313 व्हाट्सएप नंबर पर रजिस्टर करके अपनी लीगल, टैक्सेशन, मेडिकल समस्या का सेकेंड ओपिनियन ले सकते हैं।

टीपीएफ के ईस्ट जोन-१ के अध्यक्ष धर्मचंद धाड़ेवा ने कहा कि टीपीएफ के हर आयोजन को हमें घर-घर पहुँचाना है। टीपीएफ नेशनल फेमिना को-कन्वेनर कंचन सिरोहिया ने टीपीएफ साउथ कोलकाता फेमिना विंग को उनके अथक प्रयास के लिए साधुवाद दिया। तेरापंथ फेमिना कंसेशन चेकअप कार्यक्रम का भी लाभ लेने के लिए कहा। फेमिना को-कन्वेनर सुमिना कोठारी ने कार्यशाला की प्रमुख वक्ता काउंसलर शिप्रा सुराणा बोस का सभी से परिचय करवाया।

इस कार्यशाला में शिप्रा ने सभी प्रतिभागियों से उनके निजी जीवन का रूटीन और उसमें खुद के लिए समय निकालने के बारे में बारीकी से पूछा। कार्यक्रम में पुरुषों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में विशेष उपस्थिति टीपीएफ नेशनल फ्यूचर नेशनल को-कन्वेनर रोहित दुगड़, टीपीएफ पूर्वांचल-कोलकाता ब्रांच अध्यक्ष प्रवीण कुमार सुराणा, टीपीएफ कोलकाता जेनरल ब्रांच अध्यक्ष बबीता बैद, जयपुर के डॉ० विजय नाहटा की रही। कुल ५६ जनों की उपस्थिति रही।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन के क्रम में को-कन्वेनर सुमिता कोठारी ने कार्यक्रम में पधारे हुए सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ की फेमिना विंग कन्वेनर खुशबू दुगड़ ने किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

औरंगाबाद।

मुनि डॉ० पुलकित कुमार जी एवं साध्वी मधुस्मिता जी आदि का आध्यात्मिक मिलन औरंगाबाद में हुआ। साध्वी मधुस्मिता जी का विहार ७ किलोमीटर का था और मुनि पुलकित कुमार जी का विहार १५ किलोमीटर का था रास्ते की सेवा में औरंगाबाद, वालुज एवं पंढरपुर से बहुत से श्रावक एवं श्राविकाएँ उपस्थित थे। आध्यात्मिक मिलन के अनमोल क्षण पर साध्वी मधुस्मिता जी द्वारा रचित गीतिका के से साध्वीश्री जी ने मुनिश्री का स्वागत किया। मुनि आदित्यकुमार जी ने भी इस आध्यात्मिक मिलन पर गीतिका का संगान किया।

मुनि पुलकित कुमार जी एवं साध्वी मधुस्मिता जी दोनों ने ही अपने विचार रखे और उपस्थित समाज को प्रेरणा प्रदान की। औरंगाबाद तेरापंथ समाज के वरिष्ठ श्रावक मदनलाल आच्छा और सभा अध्यक्ष कौशिक सुराणा ने दोनों ही सिंघाड़ों के आध्यात्मिक मिलन पर अपने विचार रखे और मुनिश्री को ज्यादा से ज्यादा समय औरंगाबाद विराजने के लिए निवेदन किया।

आध्यात्मिक मिलन में मदनलाल आच्छा, चांदमल सुराणा, महेंद्र सुराणा, रमेश, विनोद मूथा, अनिल नितेश सेठिया, कैलाश लोढ़ा, प्रकाशचंद मुणोत, महावीर जोगाड़, दीपक चोरड़िया, दीपक पगारिया, डॉ० आनंद नाहर, उत्सव कोटेचा, तेयुप अध्यक्ष विवेक वागरेचा, रूपेश आबड़, गौरव सेठिया एवं तेरापंथ सभा अध्यक्ष कौशिक सुराणा उपस्थित थे।

◆ दूसरों के प्रति संवेदनशीलता हो, चित्त समाधि पहुँचाने की भावना हो, यह अनुकंपा सापेक्ष अर्थशास्त्र है।

— आचार्यश्री महाश्रमण



ज्ञानशाला के विविध आयोजन

तप अभिवंदना व ज्ञानशाला सत्र शुभारंभ

शास्त्री नगर, दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सहवर्ती मुनि नमिकुमार जी के २६ की तपस्या सांनंद प्रवर्धमान है।

मुनिश्री ने विशेष प्रेरणा देते हुए विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए श्रावक को अभिनव सामायिक का प्रयोग कराया गया, तत्पश्चात ज्ञानशाला शास्त्री नगर केंद्र के नव सत्र का शुभारंभ भी मुनिश्री के सान्निध्य में हुआ।

मुनि नमि कुमार जी के तप अनुमोदना के क्रम में मुनि कमल कुमार जी ने गीतिका का संगान किया। मुनि अमन कुमार जी ने भी अपने भाव रखे। मुनि नमि कुमार जी ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता के भाव प्रकट करते हुए मुनि कमल कुमार जी की उनके प्रति सेवा का उल्लेख करते हुए कहा कि आपकी प्रेरणा और कृपावृष्टि के कारण ही मैं इतनी लंबी-लंबी तपस्या करने में समर्थ हो पाया। ज्ञात हो मुनि नमि कुमार जी विगत में 9३ मासखमण कर चुके हैं।

कार्यक्रम में जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, पूर्व अध्यक्ष गोविंद बाफना, संरक्षक मिलाप बोधरा, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा शास्त्री नगर के कार्यकारी अध्यक्ष राजा कोठारी, मंत्री पवन चोपड़ा, तेयुप, दिल्ली के अध्यक्ष विकास सुराणा, निवर्तमान अध्यक्ष विकास बोधरा, पूर्व अध्यक्ष मनोज बोरड़, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, मानसरोवर गार्डन के मंत्री मुकेश बोरड़, महिला मंडल की अध्यक्षा मंजु जैन, दिल्ली एनसीआर ज्ञानशाला के आंचलिक सह-संयोजक महिम बोधरा एवं अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

ज्ञानशाला अध्यात्म की आधारशिला

सिकंदराबाद।

तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के तत्वावधान में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा से राघवेंद्र कॉलोनी में श्रीनगर कॉलोनी क्षेत्र की ज्ञानशाला का पावन शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि बिना लक्ष्य के की गई जिंदगी की यात्रा फलदायी नहीं बन सकती। महत्त्वपूर्ण चिंतन यह करना है कि लक्ष्य बनाया, पर सही दिशा नहीं तो लक्ष्य नहीं मिलेगा। इससे भी आवश्यक है प्रबल संकल्प हो। लक्ष्य, सही दिशा और संकल्प मंजिल प्राप्त करवाता है।

ज्ञानशाला अध्यात्म का विशिष्ट उपक्रम है एवं यह संस्कार का विशिष्ट स्थान है। चौमुखी विकास का परम पथ है।

साध्वीश्री जी ने समण श्रेणी में की गई अपनी विदेश यात्रा के अनुभव को साझा करते हुए कहा कि विदेशों में बसे भारतीय परिवार अपने भावी पीढ़ी के संस्कारों के प्रति बहुत जागरूक हैं। साध्वीश्री जी ने कहा कि ज्ञानशाला की तरह ही प्रौढ़ शिक्षा आवश्यक है। स्वाध्याय, तप आदि की यात्रा में सहभागी बनें। समय की प्रबंधता के साथ अपने कार्यों का नियोजन कर चातुर्मास काल में ज्ञान, ध्यान, तप आदि की विशिष्ट साधना करें। अध्यात्म की धारा में अभिस्नात होते रहें। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाएँ भी अच्छे श्रम का समायोजन कर रही हैं।

राघवेंद्र कॉलोनी की ओर से तिलोकचंद सिपानी ने कहा कि गुरु कृपा से हमने एक प्रबुद्ध साध्वीश्री का चातुर्मास प्राप्त किया है, हमें अधिक से अधिक लाभ लेना है। ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका सीमा दस्सानी ने विचार व्यक्त किए। साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने कहा कि ज्ञानशाला एक ऐसा प्रांगण है जहाँ से विकास के सोपान पर चढ़ा जा सकता है। खुद को निखारा जा सकता है। प्रकाश युक्त जीवन जीया जा सकता है। प्रशिक्षिकाओं ने गीत प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने प्रस्तुति दी।

साध्वीवृंद ने गीत का सह संगान किया। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में श्रीनगर कॉलोनी ज्ञानशाला के बैनर का अनावरण किया गया। इस अवसर पर सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष बाबूलाल बैद, मंत्री सुशील संचेती, ज्ञानशाला प्रभारी सुनील बोहरा, आंचलिक संयोजक सीमा दस्साणी, क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा, महिला मंडल की अध्यक्षा अनिता गिड़िया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, तेयुप के अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल व धर्मसभा में श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव

तिरुक्कलीकुंड्रम।

तेरापंथ महासभा के तत्वावधान में ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव तिरुक्कलीकुंड्रम में साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में मनाया गया। पहली बार श्रीपेरंबदूर, वालाजाबाद, विल्लुपुरम व तिरुक्कलीकुंड्रम ज्ञानशाला ने एक साथ मिलकर वार्षिकोत्सव मनाया।

साध्वी लावण्यश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की। स्वाति बरोला ने सभी का स्वागत किया। तिरुक्कलीकुंड्रम प्रशिक्षकों ने मंगलाचरण गीत गाया। श्रीपेरंबदूर, वालाजाबाद, विल्लुपुरम, तिरुक्कलीकुंड्रम के ज्ञानार्थियों ने मिलकर ज्ञानशाला गीत का संगान किया। शेष तमिलनाडु एवं केरल के संयोजक एवं तिरुक्कलीकुंड्रम ज्ञानशाला के संयोजक विमला दुगड़ ने अतिथियों का परिचय दिया और अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

श्रीपेरंबदूर ज्ञानशाला से नुपुर सोलंकी ने वहाँ की रिपोर्ट दी तथा मुनि अतिमुक्तक की दीक्षा पर प्रस्तुति दी। छोटे बच्चे अधविक ने कविता सुनाई। वालाजाबाद ज्ञानशाला प्रशिक्षिका ममता धारीवाल तथा ज्ञानार्थी ने मिलकर ईर्ष्या पर लघु नाटिका, विल्लुपुरम व वलनुर की प्रशिक्षिका ने भाषण दिया।

साध्वी सिद्धांतश्री जी ने ज्ञानशाला ज्ञानार्थी को माप्रदर्शन देते हुए बहुत सी बातें समझाईं। अनीता चोपड़ा ने कहा कि ज्ञानशाला आने से बच्चों में संस्कार पल्लवित होते हैं। कमलेश बाफना ने ज्ञानार्थी को महत्त्वपूर्ण बातें बताईं। साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि जितना प्रशिक्षकों का संस्कार निर्माण में हाथ है उतना ही अभिभावकों का बच्चों के निर्माण में है। स्थानीय पूर्व अध्यक्ष बाबूलाल खाटेड़ ने अपनी भावना व्यक्त की। तिरुक्कलीकुंड्रम ज्ञानशाला को सुचारु रूप से चलाने में श्रावक चंपालाल दुगड़ का पूरा योगदान है। मंच संचालन किरण दुगड़ ने किया व धन्यवाद ज्ञापन सरिता बरोला ने किया।

श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

हिसार।

मौन साधिका शासनश्री साध्वी राजकुमारी जी, शासनश्री साध्वी यशोधरा जी, साध्वी संयमप्रभा जी, साध्वी प्रेमलता जी, डॉ० साध्वी शुभप्रभा जी के सान्निध्य में शासनश्री रमाकुमारी जी की श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

मौन साधिका शासनश्री साध्वी राजकुमारी जी ने कहा कि हमारी संसारपक्षीया सबसे छोटी बहन साध्वी रमाकुमारी जी कार्यकुशल, रचनाकार, लेखिका एवं गायिका थी। वह बहुत विनम्र थी। हम तीनों के सामने उन्होंने कभी भी जबाव नहीं दिया। वे मेरी साधना में बहुत योगभूत बनीं। हमें निश्चित रखती थीं। सारा कार्य तत्परता से कर लेती थीं। उनके जाने से हमें उनकी कमी महसूस हो रही है। उनकी चेतना ऊर्ध्वारोहण करती रहे। वो सिद्ध, बुद्ध, मुक्त हों, ऐसी कामना करती हूँ।

शासनश्री साध्वी जयश्री जी ने कहा कि साध्वी रमाकुमारी जी का जीवन हीरे जैसा था। वे आयुर्वेद की एवं स्वर विज्ञान की वेत्ता थी, प्रबुद्ध थी। पर कोई भी काम बिना दिखाए, बिना पूछे नहीं करती। उम्र में मुझसे छोटी होते हुए भी पहले चली जाएगी यह हमने नहीं सोचा था। वह सब कामों की जिम्मेदारी स्वयं रखती थीं।

शासनश्री साध्वी यशोधरा जी ने अपना लिखित संदेश प्रदान किया। साध्वी प्रेमलता जी की ओर से साध्वी लोकप्रभा जी ने कहा कि साध्वी रमाकुमारी जी की अनेक पुस्तकें हैं पर स्वर विज्ञान की पुस्तक बहुत उपयोगी है। साध्वी लाघवप्रभा जी ने मधुर गीत का संगान किया।

साध्वी शुभप्रभा जी ने कहा कि 'मीठी बोली खुला हाथ : सारा जहाँ आपके साथ' यह साध्वी रमाकुमारी जी का परिचय है। आंगंतुक को समय देती, समस्या समाधान करती। उनकी खास विशेषता जो मुझे लगी वह यह है कि उनमें प्रायश्चित का मनोभाव था। उनका मनोबल सुदृढ़ था, गजब की स्फूर्ति थी। उनके द्वारा रचित प्रेषित मंगल दोहे के संदर्भ में ५ मार्च को प्राप्त पूज्यप्रवर के मंगल संदेश का वाचन साध्वीश्री जी ने किया तथा उनके अनेक गुणों का वर्णन साध्वी शुभप्रभा जी ने गीत के माध्यम से किया।

शासनश्री साध्वी नीतिश्री जी, साध्वी ऋजुयशा जी, साध्वी अमृतयशा जी, साध्वी कांतयशा जी, साध्वी मंदारयशा जी, साध्वी अनन्यप्रभा जी ने वक्तव्य, गीत के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

सभाध्यक्ष संजय जैन, चिकित्सा प्रभारी श्यामसुंदर जैन, सभामंत्री गौरव जैन ने साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन किया। अणुव्रत समिति के कुंदनलाल, डॉ० मीनाक्षी बंसल, नीरज जैन, महिला मंडल अध्यक्षा योगिता जैन ने भावाभिव्यक्ति दी।

महिला मंडल की सुमन, सुधा, विजया, रेणु आदि बहनों ने आर्यनगर में स्थित साध्वी प्रशमरति जी आदि साध्वियों द्वारा रचित गीत का संगान किया। शासनश्री साध्वी यशोधरा जी एवं साध्वी कांतयशा जी द्वारा रचित गीत का साध्वीवृंद ने संगान किया।

कार्यक्रम का संयोजन वरिष्ठ श्रावक मास्टर नंदलाल जैन ने किया। उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

नैतिक जागरण की पाठशाला - अणुव्रत

रामपुराफुल।

जय तुलसी अणुव्रत पब्लिक स्कूल के परिसर में साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि विद्या मंदिर के प्रांगण में अणुव्रत आंदोलन के ७५वें वर्ष के शुभारंभ का कार्यक्रम नियोजित होने जा रहा है। तेरापंथ के क्रांतिकारी आचार्य गुरुदेव तुलसी विलक्षण मेधा के धनी थे। उन्होंने आध्यात्मिक क्षेत्र में ही नहीं अपितु सामाजिक क्षेत्र में भी रूढ़िवाद को प्रथय न देकर आध्यात्मिक अभ्युदय किया। झोंपड़ी से लेकर प्रधानमंत्री भवन तक अणुव्रत का शंखनाद किया। व्यक्तित्व निर्माण की प्रयोगशाला है—अणुव्रत। चारित्र निर्माण का सशक्त साधन है—अणुव्रत नैतिक जागरण की पाठशाला है—अणुव्रत।

आपने आगे कहा कि अणुव्रत के छोटे-छोटे संकल्पों को स्वीकार कर स्कूल के बच्चे सुनहरा भविष्य बनाकर भारत के अच्छे नागरिक बनें। विद्यार्थी अणुव्रत नियमों को स्वीकार कर नकल न करने का व नशामुक्त जीवन जीने का साध्वीश्री जी ने बच्चों को संकल्प करवाया।

साध्वी हेमंतप्रभा जी ने मेमोरी पावन बढ़ाने के कुछ प्रयोग करवाए। साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी भी इस अवसर पर उपस्थित थीं।

स्कूल के बच्चों ने अणुव्रत गीत के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उसके पश्चात विद्यार्थी अणुव्रत नियमों का वाचन किया। करीब 9५9 बच्चे इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। प्रिंसिपल उर्मिला बंसल ने अपने भाग्य की सराहना करते हुए साध्वीश्री जी का स्वागत किया। इसके साथ अनेक प्रशिक्षिका उपस्थित थीं। सराहनीय है जय तुलसी अणुव्रत पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों का अनुशासन।

साध्वीश्री जी ने कहा कि यथा नाम तथा गुण के साथ स्कूल गति से प्रगति की ओर आरोहण करें।



शास्त्रीनगर में खिली धर्म फुलवारी

शास्त्रीनगर, दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी के प्रवास में शास्त्रीनगर में पाँचों समय धर्म-ध्यान का अनुपम रंग खिला। प्रातः ४:३० बजे से ही सामायिक, स्वाध्याय का क्रम चलता, जिसमें भाई-बहनों की अच्छी उपस्थिति रहती। शहादरा, कृष्णानगर, त्रिनगर, मोती नगर, द्वारका से भी भाई-बहन बड़े उत्साह से समय पर पहुँचते, भक्तांमर उपसर्गहर स्तोत्र, चालीसा विविध गीतिकाएँ, अर्हम वंदना, प्रार्थना एवं वृहद मंगलपाठ से कार्यक्रम संपन्न होता। प्रातः प्रवचन, दोपहर ज्ञानचर्चा, शाम को गुरु वंदना, रात्रि में रात्रिकालीन प्रवचन जिसमें उपस्थित लोग सामायिक सहित लाभ लेते।

प्रति रविवार दोपहर से घर-घर

नमस्कार महामंत्र का जप, उपवास परिवार सहित सप्ताह में एक दिन रात्रि भोजन परिहार, सामूहिक सामायिक, सामूहिक नवकारसी, नशामुक्त परिवार की प्रेरणा से काफी परिवार जुड़े।

नवरात्रि के अवसर पर सुबह-शाम व्यवस्थित अनुष्ठान का क्रम चला।

मुनि नमि कुमार जी की २७ दिन की तपस्या के उपलक्ष्य में काफी लोगों ने एकासन उपवास बेला-तेला करके तपमय वातावरण बना दिया। मुनि कमल कुमार जी ने दो गीतों का निर्माण कर मुनि नमि कुमार जी की विविध विशेषताएँ बताई। मुनि अमन कुमार जी ने भी नमि मुनि के साहस का वर्णन किया। मुनि नमि कुमार जी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए गुरुदेव महाश्रमण जी, शासनमाता एवं मुनि कमल कुमार जी

की प्रेरणा और उपकार का विशेष उल्लेख किया।

ज्ञानशाला का सत्र प्रारंभ करने से पूर्व ज्ञानार्थियों ने अर्हम की वंदना फले, महावीर अष्टकम्, तुलसी अष्टकम् कविता, वक्तव्य से सबको मोहित कर दिया। मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि सभी अपने बच्चों को ज्ञानशाला की प्रेरणा दें, जिससे परिवार, समाज और संघ की गरिमा-महिमा बढ़े। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, महिला मंडल की अध्यक्षा मंजु सोनी, ज्ञानशाला के आंचलिक सह-संयोजक महिम बोथरा ने प्रशिक्षिका और ज्ञानार्थियों का उत्साहवर्धन किया। भाई-बहनों की सामायिक सहित उपस्थिति देखकर सबका मन बाग-बाग हो गया।

यह स्वागत तेरापंथ की मर्यादा व अनुशासन का है

फरीदाबाद।

साध्वी अणिमाश्री जी का जयपुर से विहार करते हुए फरीदाबाद पदार्पण हुआ। फरीदाबाद के श्रावक समाज ने उत्साह, उमंग के साथ अध्यात्म की सुरसरिता का स्वागत किया। साध्वीश्री जी के आगमन से शहर में खुशी की लहर दौड़ गई।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आज का यह स्वागत हमारा नहीं, गुरुदेव की कृपा का स्वागत है, तेरापंथ धर्मसंघ की मर्यादा व अनुशासन का स्वागत है। गुरुदृष्टि का स्वागत है, एक गुरु व एक विधान का स्वागत है। हमें जैन शासन मिला, यह भाग्य की बात है, किंतु हमें तेरापंथ धर्मसंघ मिला, यह परम सौभाग्य की बात है। गुरु की अनुशासना में रहने वाला, हर पल

निश्चितता की अनुभूति करता है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि फरीदाबाद का श्रावक समाज जागरूक है, मार्ग सेवा में सक्रिय एवं उत्साही है, सभी पदाधिकारी दायित्वशील हैं। हमारे फरीदाबाद आगमन में हमारे संसारपक्षीय भाई आर०सी० जैन की अर्ज भी बहुत योगभूत बनी है। हमारे प्रवास का पूरा श्रावक समाज भरपूर लाभ उठाए।

डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि जिसकी सोच सकारात्मक होती है, जो कूल माइंडेड होता है, जो ईर्ष्या नहीं रखता वो अपने जीवन में खुशी व आनंद का ताज पहन सकता है।

टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने कहा कि साध्वीश्री जी का

प्रभावक प्रवचन जीवन मूल्यों को आत्मसात कराने वाला होता है, संघभक्ति व गुरुभक्ति से संभूत प्रवचन जन-जन में आस्था के अंकुरण का सार्थक प्रयास करता है।

साध्वीवृंद ने भावपूर्ण गीत का संगान किया। जेएसटी सभाध्यक्ष गुलाब बैद, टीपीएफ अध्यक्ष राकेश सेठिया, महिला मंडल अध्यक्षा सुमंगला बोरड, तेयुप अध्यक्ष विवेक बैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष आई०सी० जैन, टीपीएफ नॉर्थ जोन अध्यक्ष विजय नाहटा, जीतो फरीदाबाद के अध्यक्ष प्रवीण रांका, रायचंद जैन, चैन रूप तातेड़ ने भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन सभा के सहमंत्री नवीन जैन ने किया। महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

मोक्षा प्राप्ति के लिए दया धर्म...

(पृष्ठ १२ का शेष)

कन्या मंडल द्वारा १८ पापों पर प्रस्तुति हुई तो पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाते हुए कहा कि जयाचार्य की पुरानी तत्त्व-ज्ञान की गीतिकाओं को कंठस्थ किया जाए। ज्ञानशाला भी प्राइमरी स्कूल के समान है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि जो व्यक्ति हल्का होता है, वह ऊर्ध्वगमन करता है और जो भारी होता है, वह अधोगति को प्राप्त कर सकता है। जो हल्का होता है, वो भगवान और जो भारी हो वह शैतान बन सकता है। हमें परमात्मा बनना है, हल्का बनना है। १८ पापों से उपरत जीव हल्का बन जाता है। हर व्यक्ति में परमात्मा भी है और शैतान भी है। हमें हमारे परमात्मत्व को जागृत कर हल्का बनना है। इसके लिए हमारे कषाय प्रतनू बनें। ध्यान-स्वाध्याय के अभ्यास से आत्मा कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकती है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है उसकी जबान। हमें शांत सहवास का पथ चुनना है, तो हमें वाणी का संयम रखना होगा। वाणी को संयमित रखने के लिए अनावश्यक न बोलें, ऊँची भाषा और कम से कम बोलें। कब बोलें, कहाँ बोलें, उसका विवेक रखें। मीठी वाणी बोलें और कषायमुक्त भाषा बोलें। भाषा से ही व्यक्ति की जाति और कुल की पहचान होती है। पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्थानीय महिला मंडल अध्यक्षा चांद छाजेड़ एवं प्रवास व्यवस्था समिति से विजयराज सुराणा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कन्या मंडल की १८ पापों पर सुंदर प्रस्तुति हुई। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीत की प्रस्तुति दी।

पूज्यप्रवर ने वर्तमान में वर्षीतप करने वाले भाई-बहनों को प्रत्याख्या करवाए। राजस्थानी भाषा और संस्कृति प्रचार मंडल द्वारा नववर्ष का कैलेंडर पूज्यप्रवर को उपहृत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

♦ वित्तीय उत्थान के साथ-साथ वृत्त की शुचिता को वृद्धिगत करने का भी प्रयास किया जाए तो स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में प्रस्थान हो सकता है।

— आचार्यश्री महाश्रमण



तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

फिट युवा - हिट युवा

डोंबिवली।

अभातेयुप के फिट युवा-हिट युवा आयाम के अंतर्गत तेयुप, डोंबिवली ने खोपोली ने युवा स्पार्क ईवेंट का आयोजन किया। मुख्य उद्देश्य रहा संगठन को मजबूत करना।

तेयुप अध्यक्ष ललित मेहता ने गुरुदेव के मुंबई चतुर्मास पर कैसे हम युवाओं को और अधिक जागरूक रहना और संगठन अधिक मजबूत हो इस पर अपने विचार रखे। सभी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग से दिन की शुरुआत की।

मुख्य वक्ता के रूप में नीतिन कोठारी ने सभी को आर्थिक व्यापार पर मार्गदर्शन करते हुए जागरूक रहने की बात बताई। सामायिक साधक के अंतर्गत सामायिक की गई, जिसमें महाप्रज्ञ अष्टकम् का संगान भी किया गया। संयोजक के रूप में सहमंत्री दीपक बाफना और किशन डागलिया का सहयोग रहा। कोषाध्यक्ष भरत धाकड़ सहमंत्री महावीर सिंधवी की उपस्थिति रही। युवाओं ने अपने विचार रखे व उत्साहपूर्वक फिट युवा-हिट युवा के इस आयाम को संपन्न किया।

सेवा कार्य

राजाजीनगर।

तेयुप राजाजीनगर द्वारा सेवा के अंतर्गत इस महीने मानव सेवा का कार्य Nemmadi Mane Foundation राजाजीनगर, बैंगलोर (अनाथ आश्रम) में संपादित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से की गई। ट्रस्ट में रोजाना उपयोग में आने वाली सामग्री आटा, शक्कर, चावल, तूरदाल, तेल आदि सामग्री प्रदान की गई।

बच्चों द्वारा अपनी भावी जीवन की महत्वाकांक्षाओं को परिषद परिवार के समक्ष व्यक्त किया गया। ट्रस्ट के प्रभारी ने इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए परिषद परिवार के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया।

इस अवसर पर सेवा कार्य हेतु तेयुप, राजाजीनगर मंत्री कमलेश चोरड़िया, रनीत कोठारी, सुनील मेहता, अजिंक्या चौधरी, अरविंद दुगड़, पवन कोठारी की उपस्थिति रही। सेवा कार्य के संयोजक मुकेश भंडारी का श्रम नियोजित हुआ।

रक्तदान शिविर

साउथ कोलकाता।

अभातेयुप के तत्वावधान में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के कार्यक्रम के तहत तेयुप, साउथ कोलकाता ने आकांक्षा सिरोहिया के जन्मदिन पर उनके परिवार एवं TPF Futura Wing के साथ मिलकर रक्तदान शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में किया। इस शिविर में कुल ६० पंजीकरण हुए और कुल ५३ यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। परिषद् के मंत्री मोहित दुगड़ ने एमबीडीडी के अंतर्गत परिषद् की गतिविधियों से सबको अवगत कराया।

कार्यक्रम में साउथ सभा के सहमंत्री कमल कोचर एवं यशवंत रामपुरिया, कोषाध्यक्ष रतनलाल सेठिया, टीपीएफ के उपाध्यक्ष राजेश भूतोड़िया, टीपीएफ के ईस्ट जोन-१ के अध्यक्ष धर्मचंद धाड़ेवा, महिला मंडल, साउथ कोलकाता की सचिव बबीता भूतोड़िया, टीपीएफ साउथ कोलकाता अध्यक्ष आलोक चोपड़ा सचिव प्रवीण सिरोहिया, अभातेयुप सदस्य जय चोरड़िया सहित अनेक पदाधिकारीगण, सदस्य एवं गणमान्यजन उपस्थित थे।

कार्यक्रम को सफल बनाने में कार्यक्रम के संयोजक सौरभ श्यामसुखा और जिनेंद्र सुराणा का विशेष योगदान रहा।

२७ बोल प्रतियोगिता का आयोजन

मदुरै।

स्थानीय तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में २५ बोल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रेरणा गीत से हुई। सभी ने प्रतियोगिता में उत्साह के साथ भाग लिया।

सहमंत्री लता कोठारी ने प्रतियोगिता का अच्छा आयोजन किया। ३ राउंड्स में रोचक तरीके से प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें प्रथम स्थान ममता संकलेचा एवं सगीता सुराणा को मिला।

दुःख से मुक्ति चाहिए तो कामनाओं को छोड़ें : आचार्यश्री महाश्रमण



शाहीबाग, अहमदाबाद,
२३ मार्च, २०२३

अणुव्रत यात्रा प्रणेता, गुणों के महासमंदर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि

प्रश्न हो सकता है कि इस दुनिया में सुखी जीवन कैसे जी सकते हैं। साधु भी चित्त समाधि-शांति में रहना इच्छित कर सकते हैं। गृहस्थ तो सुखी जीवन जीने के और अधिक इच्छित हो सकते हैं।

शास्त्रकार ने सुखी जीवन जीने के कुछ उपाय बताए हैं। पहली बात है कि अपने आपको बताओ। सुविधावादी मत रहो। कठिनाई को भी झेल सको, ऐसे सामर्थ्य का सृजन करो। जो व्यक्ति सुविधावादी मनोवृत्ति वाला होता है, उसे विशेष सफलता मिलना मुश्किल हो सकता है।

विभिन्न संस्थाओं में पदाधिकारी-कार्यकर्ता होते हैं, उनमें भी कठोर जीवन जीने का अभ्यास हो तो वे कार्य कर्तृत्व में अच्छी सफलता प्राप्त करने का कुछ आधार प्राप्त कर सकते हैं। मनस्वी और कार्यशील अपने सुख-दुःख की चिंता नहीं करता। गुरुदेव तुलसी तो बहुत छोटी उम्र में नेतृत्व करने में सक्षम हो गए थे। २२ वर्ष की उम्र में हमारे धर्मसंघ के आचार्य बन गए थे।

कुछ तपस्या की हुई हो एवं तपे हुए हो। तपस्या कभी पिछले जन्म में की हुई काम आ सकती है। तपा हुआ आदमी कठोरता को सहन कर सकता है। निंदा-प्रशंसा को झेल सकता है। सुकुमारता को छोड़ें। कामनाओं को छोड़ें, कामनाएँ दूर हो गईं तो दुःख दूर हो सकता है। किसी से ईर्ष्या न करें। प्रमोद भावना रखें। मनुष्य अनपेक्षित मनोवृत्ति वाला न बने तो सुखी रह सकता है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतिविभा जी ने कहा कि शास्त्रज्ञ वह होता है, जिसके मन में शांति होती है। सब शास्त्रों का एक ही सार है—शांति। शांति में रहने का अच्छा उपाय है—वर्तमान में रहना। मन एकाग्र होगा तो अध्ययन कर पाएँगे। एकाग्रता के लिए लंबा अभ्यास और प्रयोगों के साथ जुड़ा होना होगा।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि जो ताकतवर होता है, वही मुसीबतों का सामना कर सकता है। जो व्यक्ति सहनशील, सहिष्णु होता है, वही स्थिति का सामना कर सकता है। सहिष्णुता से जीवन में क्षमा का गुण आता है। जो सहता है, वह रहता है।

डॉ० धवल शाह, धीरज मरोटी, Apik Hospital से डॉ० अनिल जैन ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। राजेंद्र बोधरा ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। डॉ० काबरा, डॉ० उपेंद्र, डॉ० कल्पना जैन, डॉ० रूपकुमार अग्रवाल, डॉ० हसमुख, डॉ० विमल रांका आदि चिकित्सा सेवा देने वाले डॉक्टरों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आध्यात्मिक साधना का मूलाधार है आत्मवाद : आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग-अमदाबाद, २६ मार्च, २०२३

अणुव्रत यात्रा के प्रणेता एवं उनकी धवल सेना का अहमदाबाद का १८वाँ दिन एवं शाहीबाग प्रवास का अंतिम दिन। जैन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन दर्शन के अनेक सिद्धांत हैं। छः दर्शनों में समुच्चय भी एक ग्रंथ है। नास्तिक दर्शन की भी बात आई है। नास्तिक दर्शन पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करता।

आस्तिक दर्शन की एक पहचान यह है कि वह पुनर्जन्म में विश्वास करता है, आत्मा के स्थायी तत्त्व को स्वीकार करता है। अध्यात्म की जितनी साधना है, उसका मूल आधार आत्मवाद है। यदि आत्मा शाश्वत नहीं है, पुनर्जन्म नहीं है तो फिर साधु बनने की सार्थकता नहीं, न ही तपस्या-आराधना की अपेक्षा है।

आत्मवाद है, तो पुनर्जन्मवाद है। पुनर्जन्म की बात अन्य दर्शनों में भी प्राप्त हो जाती है। जैसे आदमी पुराने वस्त्रों को छोड़ नए वस्त्र धारण कर लेता है, उसी प्रकार यह आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को धारण कर लेती है।

पुनर्जन्म का मूल कारण है—कषाय, क्रोध, मान, माया और लोभ। कषाय पूर्ण रूप से क्षीण हो जाएँ तो मुक्ति तैयार है। पुनर्जन्म में अगर असंघिणता है तो भी तुम जीवन में अच्छा काम करो। कोई नुकसान नहीं होगा। अगर पुनर्जन्म है और अच्छे काम किए तो आगे भी अच्छा मिलने की आशा रखो। आस्तिक हो या नास्तिक जीवन में बुरे काम मत करो। हम तो आस्तिक बनकर जीवन जीएँ।

नास्तिकवाद का कोई अच्छा जानकार है, तो मुझे आकर मिले। उसके साथ चर्चा कर नास्तिकवाद को समझने का प्रयास करें। मैं भी उसे अपनी बात बताऊँ।

प्रेक्षाध्यान पद्धति में पुनर्जन्म का प्रयोग भी चलता था। पुनर्जन्म को सींचन कषायों से मिलता

है। हम कषायों से मुक्त रह सकें, हलके रह सकें तो हम पुनर्जन्म को सींचन नहीं दे सकेंगे। तो एक दिन पुनर्जन्म निष्प्राण हो सकता है, आत्मा को मुक्ति की प्राप्ति हो सकती है। हमारा शाहीबाग का ११ दिवस का प्रवास आज पूर्ण हो रहा है। शाहीबाग की जनता में भी खूब धार्मिक जागरणा बनी रहे, यही मंगलकामना है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतिविभा जी ने कहा कि व्यक्ति लक्ष्य बनाकर, लक्ष्य का निर्धारण कर, लक्ष्य तक पहुँचना चाहता है। पर कई बार आदमी अपने संकल्प तक नहीं पहुँच पाता, उसके तीन कारण बताए गए हैं—इंद्रियों और मन पर संयम न होना, परिषहों को नहीं जीत पाना और चित्त की चंचलता। हमारा संकल्प सुदृढ़ हो तो हम लक्ष्य की सिद्धि को प्राप्त कर सकते हैं।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि संघ व्यक्ति के लिए आधार होता है, संघ गति, प्रतिष्ठा और त्राण होता है। चतुर्विध संघ होता है। संघ में श्रावक विकास करता है। श्रावक श्रद्धाशील, विश्वस्त और प्रयोगधर्मा होता है। श्रावक धर्म को जानें, जीएँ और उसके आचरणों में आएँ।

शिल्पा-भरत भंसाली एवं उनकी सुपुत्री नीता भंसाली ने पूज्यप्रवर से २७ की तपस्या मासखमण के प्रत्याख्यान लिए। मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने रविवार की गीतिका का सुमधुर संगान किया।

पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में जवेरीलाल संकलेचा, विमल बोरदिया, कांतिलाल चोरडिया (सभाध्यक्ष), तेयुप मंत्री दिलीप भंसाली एवं जसराज बुरड ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। चिकित्सा सेवा में सहयोगी डॉक्टरों का व्यवस्था समिति द्वारा सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि कालचक्र गतिमान है, काल किसी का दास नहीं है।

सुविचारों से मन को बनाएँ सुमन : आचार्यश्री महाश्रमण

कांकरिया, मणिनगर, २७ मार्च, २०२३

अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी अहमदाबाद के उपनगरों की यात्रा करते हुए शाहीबाग से दक्षिणी भाग कांकरिया मणिनगर के क्षेत्र में स्थित जे०एम० जैन हाउस में प्रवास हेतु पधारे। शाहीबाग से प्रातः विहार के साथ हजारों-हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने विदाई दी। मार्ग में जगह-जगह पूज्यप्रवर श्रावक समाज को आशीर्वाद प्रदान करते हुए आगे बढ़ रहे थे। न्यू क्लोक् मार्केट में पूज्यप्रवर जैन मंदिर में भी पधारे।

कांकरिया मणिनगर के सैकड़ों-सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने अणुव्रत सर्कल पर पूज्यप्रवर की अगवानी की। विशाल जुलूस के साथ पूज्यप्रवर का जे०एम० जैन हाउस में पदार्पण हुआ। झुलेलाल ओपन ऐयर ग्राउंड में परम पावन ने मंगल देशना प्रदान करते हुए एक प्रसंग से समझाते हुए फरमाया कि दुनिया में सबसे बड़ा आकाश होता है। आकाश अनंत है, उसका कोई आरपार नहीं होता।

दुनिया में सबसे आसान काम दूसरों की निंदा-आलोचना करना होता है। सबसे कठिन काम है—अपनी आत्मा की पहचान करना, जानना दुनिया में सबसे गतिशील आदमी का मन-विचार होता है। हम समनस्क प्राणी हैं और आत्मा मूल तत्त्व है। आत्मा और शरीर का संयोग जीवन है।

आत्मा, शरीर, मन और वाणी ये चार चीजें हो जाती हैं। मूल तो आत्मा है, शेष तीन आत्मा के कर्मकर होते हैं। सूक्ष्म शरीर-तेजस और सूक्ष्मतर शरीर कर्मण शरीर भी होता है। अध्यात्म साधना के द्वारा आत्मा को देखा जा सकता है। मन में चंचलता, निर्मलता या मलीनता भी हो सकती है। समनस्क प्राणी नरक में भी जा सकता है, तो ज्यादा धर्म की साधना भी मन वाला प्राणी ही कर सकता है।

मन एक शक्ति है। हम अपने मन को सुमन बनाएँ। दुर्मन पाप कर्म वाला होता है। हमारे मन में अच्छे विचार रहें। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में आएँ। प्रेक्षाध्यान से भी मन की चंचलता कम हो सकती है। राग-द्वेष के भाव से मन की चंचलता बढ़ जाती है। मन तो एक पंखे जैसा है। वर्तमान में अणुव्रत यात्रा चल रही है। हमारा मनोबल अच्छा रहे। प्रयास, अभ्यास और वैराग्य से मन की चंचलता को कम किया जा सकता है, अच्छा बनाया जा सकता है।

अहमदाबाद की संत अंतर्गता के अंतर्गत कांकरिया-मणिनगर क्षेत्र में आना हुआ है। चोरडियाजी का मकान भी है। यहाँ वयोवृद्धा साध्वी रामकुमारी जी प्रवासित हैं। खूब अच्छा रहे। अच्छा विकास हो।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतिविभा जी ने कहा कि जो व्यक्ति अपने अतीत, वर्तमान व भविष्य का मूल्य नहीं जानता वह अपनी अस्मिता को नहीं रख पाता। पूज्यप्रवर भावी पीढ़ी को संस्कारित बनाने के लिए प्रलंब यात्राएँ करवा रहे हैं। आचार्यप्रवर के मन में परोपकार की भावना है। जो व्यक्ति परोपकार की भावना रखता है व अमर बन जाता है। परम पावन लोगों का आत्मोत्कर्ष-उत्थान कर रहे हैं।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में कांकरिया-मणिनगर सभाध्यक्ष विरेंद्र मुणोत, उपासक डालमचंद नौलखा, रायचंद लूणिया, जीतमल चोरडिया, श्वेता मुणोत व महिला प्रकोष्ठ ने अपनी प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों की सुंदर प्रस्तुति हुई। ज्ञानार्थियों एवं महिलाओं ने संकल्प स्वीकार किए। शिल्पा भंसाली एवं नीता भंसाली ने २८ की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



तेयुप अहमदाबाद द्वारा युवा सम्मेलन विजन-२०२५ का आयोजन

समय का सदुपयोग करना जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग, अहमदाबाद,
२२ मार्च, २०२३

वि०सं० २०२०, हिंदी नववर्ष चैत्र शुक्ला एकम्। जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में तेरापंथ युवक परिषद् अहमदाबाद द्वारा युवा सम्मेलन विजन-२०२५ युवा ३६० (संरचना शिखर) का आयोजन हुआ। इस अवसर पर गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजयभाई रूपाणी की उपस्थिति रही।

ऊर्जा के ब्रह्मकमल आचार्यप्रवर ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आज वि०सं० २०२० का प्रारंभ हुआ है, २०७६ को मानो विदाई हो चुकी है। नया वर्ष वर्तमान हो गया है। यह दुनिया की व्यवस्थाएँ हैं, कि जो भविष्य होता है, वह वर्तमान बन जाता है और वर्तमान अतीत बन जाता है।

समय का क्रम है—वर्तना। समय तो बीतता है, उस समय का आदमी उपयोग क्या करता है, यह खास बात होती है। समय का सदुपयोग, दुरुपयोग और अनुपयोग हो सकता है। हम समय का सदुपयोग करने का प्रयास करें। यह विजन-२०२५ भी समय की ही बात है। ये सब क्षेत्र और काल की व्यवस्था है। हर घटना में समय और क्षेत्र दोनों जुड़े हुए होते हैं।

अहमदाबाद में २०२५ भी एक महत्वपूर्ण अवसर माना जा सकता है। तेयुप, अहमदाबाद है, युवा अवस्था का अच्छा उपयोग हो सकता है। मैत्री, सहयोग का आध्यात्मिक सेवा में उपयोग हो। मुमुक्षु निर्माण का कार्य हो।

नव संवत्सर के उपलक्ष्य में पूज्यप्रवर ने विशेष कृपा करते हुए वृहद् मंगलपाठ का श्रवण करवाया।

आज रूपाणीजी का भी समागमन



हुआ है। राजनीति भी एक सेवा का क्षेत्र है। राजनीति में आने वाले लोग अपने सिद्धांतों पर चलें। राजनीति में भी धर्म के मूल्य बने रहें। अहिंसा, नैतिकता और संयम धर्म के तत्त्व हैं। इनसे राजनीति अच्छी रह सकती है। राजनीति में पवित्रता हो। सत्ता सेवा के लिए मिली है। जितना समय मिले कुछ धर्म के लिए लगाएँ। जीवन सात्त्विक और अध्यात्म से परिपूर्ण रहे। गुजरात में भी खूब अच्छा रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि भारत के युवा पूरे विश्व में छाए हुए हैं। भारत के युवाओं के आई क्यू का विदेशी लोहा मानते हैं। युवा शक्तिशाली और कार्यदक्ष होता है। युवाओं को अपने जीवन का विजन बनाना है। आपका विजन हो Live Terapanth. हमारे युवक श्रद्धा संपन्न बनें। आपको उन युवकों तक पहुँचना है, जो अभी तक यहाँ नहीं पहुँचे हैं। हमेशा

संघ व संघपति से जुड़े रहना है। युवक संस्कारसंपन्न बनें। शिक्षण संपन्न बनें। जैन दर्शन व तेरापंथ दर्शन को समझने का प्रयास करें।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि हमारा जीवन हमारे हाथ में है, इसलिए यह तय करें कि हमें कैसे जीना है। युवक सेवा कर, संस्कारित एवं एकजुट हो कार्य कर सकते हैं। युवक अपनी क्षमता का सम्यक् उपयोग कर सकते हैं। युवा श्रद्धाशील और प्रयोगधर्मा हो ताकि वह शांति का जीवन जी सके एवं समाज में उन्नति ला सके।

पूर्व मुख्यमंत्री गुजरात राज्य सरकार विजयभाई रूपाणी ने कहा कि मैं तेयुप का आभार मानता हूँ कि नववर्ष के उपलक्ष्य में मुझे आचार्यश्री के दर्शन का अवसर मिला। हम सब भगवान महावीर की संतान हैं। भगवान महावीर का सिद्धांत है—अहिंसा,

अनेकांत और अपरिग्रह। आत्मा ही परमात्मा बन सकती है।

आज तेयुप का युवा सम्मेलन हो रहा है। आज का युवक समझदार है। युवक हमारी संपत्ति है, ताकत है। इसी ताकत पर भारत विश्व गुरु बना है। दुनिया हमारे



मोक्ष प्राप्ति के लिए दया धर्म का पालन करें : आचार्यश्री महाश्रमण



शाहीबाग-अहमदाबाद,
२४ मार्च, २०२३

क्षमामूर्ति आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि

आदमी के मोह कर्म का औदयिक भाव रहता है, तो क्षायोपशमिक भाव भी होता है। औदयिक भाव और क्षायोपशमिक भाव में कई बार संघर्ष भी चलता है। कभी हमारा

क्षायोपशमिक भाव प्रबल हो जाता है, तो मोहनीय कर्म को पछाड़ने का कार्य कर लेता है। कभी मोहनीय कर्म प्रबल होता है, तो क्षायोपशमिक भाव मानो कुछ निस्तेज-सा हो जाता है।

यह भीतर का मानो युद्ध-संघर्ष है। यह संघर्ष चलते-चलते कभी मोहनीय कर्म सर्वथा क्षीण भी हो सकता है। मोहनीय कर्म क्षीण यानी कर्मों के सेनापति का नाश हो गया है। मोहनीय कर्म है तो आदमी के भीतर हिंसा-आक्रोश, निष्ठुरता के भाव प्रस्फुटित हो सकते हैं। मोहनीय कर्म विलय की स्थिति में आगे बढ़ता है, तो आदमी में दया, अनुकंपा, मैत्री और अहिंसा के भाव भी विकसित होते हैं।

अनुकंपा आदमी का एक अच्छा गुण

होता है। अनुकंपा का अर्थ है, दूसरे को दुःख-पीड़ा नहीं देना। किसी की आध्यात्मिक सेवा हो तो अच्छा है। किसी के कार्य में सलक्ष्य पीड़ा देना, बाधा डालने का प्रयास न करें। यह अनुकंपा का एक भाग है। दूसरा भाग है—दूसरों के दुखों को दूर करने, साता पहुँचाने, चित्त समाधि पहुँचाने, आध्यात्मिक शांति पहुँचाने में योगदान देना।

आध्यात्मिक सेवा अनुकंपा ही है, साथ में मैत्री हो तो अनुकंपा परिपूर्ण हो सकती है। हम पापों से बच सकते हैं। निष्ठुर आदमी पाप कार्य ज्यादा करता है। दया-कल्याण को करने वाली, दुखों को दूर करने वाली और संसार सागर से तरने वाली नाव होती है। यह भगवान महावीर और

मुनि मेघ के प्रसंग से समझाया।

पूर्वकृत पुण्य जीव की रक्षा करते हैं। मेघकुमार ने हाथी के भव में खरगोश पर अनुकंपा की थी, ऐसी दया-अनुकंपा हम सबके भीतर पुष्ट हों। पाप आचरणों से अपनी आत्मा को बचाना भी दया है। तीर्थंकर भी प्रवचन जीवों के कल्याण के लिए करते हैं। प्रवचन भी इस भावना से किया जाए कि दूसरों को ज्ञान-बोध मिले, अच्छी दिशा में आगे बढ़ें। किसी के आध्यात्मिक कल्याण के लिए आध्यात्मिक सेवा करना दया-मैत्री ही है। छोटे-छोटे प्राणियों के प्रति दया का भाव हो। दया धर्म का पालन कर हम मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

(शेष पृष्ठ १० पर)